

उन्नति

नौवां संस्करण

पत्रिका

वर्ष - 2021



लोकहितार्थ
सत्यनिष्ठा

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखाविभाग
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
दक्षिण पश्चिम रेल्वे, हूबल्ली कर्नाटक- 580023

याना गुफाएं, सिरसी कर्नाटक



संजय कुमार
 प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा

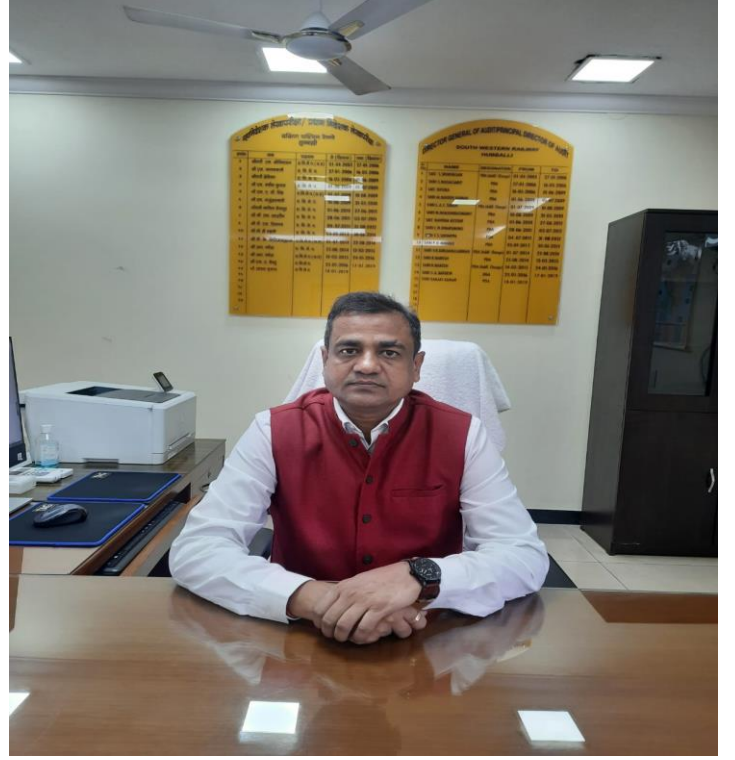
“उन्नति”

(नौवां अंक) वर्ष-2021

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय दक्षिण पश्चिम रेलवे हुबबल्ली

- संरक्षक** : श्री संजय कुमार, प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
- उप संरक्षक** : श्री एम. दिनेश नाईका, उपनिदेशक लेखापरीक्षा
- वरिष्ठ संपादक** : श्री डी. एम. महांतेश, व. लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री एस. श्रीकांत, व. लेखापरीक्षा अधिकारी
- सह संपादन एवं
छायाचित्र** : श्री शैलेन्द्र प्रजापति, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री राजेश प्रियदर्शी, सहायक पर्यवेक्षक
- तकनीकी सहयोग** : श्री राजेश प्रियदर्शी, सहायक पर्यवेक्षक
श्री अजय अग्रवाल, डी.इ.ओ
श्री संतोष कुमार, आशुलिपिक

शुभकामना संदेश



वर्ष 2021 में 'उन्नति' पत्रिका का नौवां अंक प्रकाशित करने में मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। कार्यालय ने राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित सभी लक्ष्यों को सुचारु रूप से प्राप्त करने का प्रयास किया है। कोरोना वायरस महामारी के बावजूद कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने हिन्दी कार्यान्वयन को भी महत्व दिया है और अपने लेखों को प्रस्तुत किया है। आशा है कि इस पत्रिका के विमोचन से समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी प्रेरित होंगे और 'उन्नति' पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य का मार्ग प्रशस्त होगा।

(संजय कुमार)
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा

उपनिदेशक लेखापरीक्षा की कलम से।।।।।।।।।।।।।।।।



'उन्नति' पत्रिका का विमोचन हिन्दी भाषा को राष्ट्रव्यापी बनाने की ओर एक सराहनीय कदम है। हिन्दी भाषा एक ऐसा माध्यम है, जो पूरे देश को एक कड़ी में पिरो सकती है। हमारे कार्यालय के हर एक कर्मचारी एवं अधिकारी, जिन्होंने अपनी मेहनत और लगन से इस पत्रिका को सफल बनाने में अपना योगदान दिया है, उन सबको मैं बधाई देता हूँ। क्योंकि यह पत्रिका एक सामूहिक प्रयास का ही परिणाम है।

मैं ऐसी आशा करता हूँ, कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी 'उन्नति' पत्रिका का नौवां संस्करण सफल हो।

(एम. दिनेश नाईका)
उप निदेशक लेखापरीक्षा

संपादकीय ।।।।।।।।



यह हमारे लिए बहुत ही हर्ष का विषय है कि हमारे कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'उन्नति' का नौवाँ संस्करण प्रकाशित हो रहा है। इससे हमारे कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपने लेखों द्वारा अपने विचारों को व्यक्त करने का मौका मिलता है। इस पत्रिका को सफल बनाने में हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों की अहम भूमिका रही है। अतः उन सबको मैं बहुत बधाई देता हूँ और 'उन्नति' पत्रिका के नौवें संस्करण की सफलता की कामना करता हूँ।

(डी. एम. महांतेश)

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन

नोट - पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार संबन्धित लेखकों के हैं। संपादक मण्डल एवं कार्यालय का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। प्रकाशित रचनाओं के संबंध में किसी भी विवाद का उत्तरदायित्व भी रचनाकारों का ही होगा।

अनुक्रमणिका

शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ
1. कुत्ता और मुर्गा	र. बद्रीनाथ	9
2. दोस्त का महत्व	डी. एम. महांतेश	10
3. चतुर सियार	एच. परमशिव्वयाह	11
4. आज ही क्यों नहीं?	श्रीकांत	12
5. जैसी करनी, वैसी भरनी	राजेश बी. नंदगड	14
6. याना	शैलेंद्र प्रजापति	15
7. आरम्भ है प्रचंड बोले मस्तकों के झुंड	पीयूष पपनेजा	18
8. फिर पंछी चहचहाएगी	संजीत कुमार झा	20
9. मेहनत का फल	मो. सलीम रजवी	21
10. ले आओ बरतन	राजेश कुमार सिन्हा	22
11. मेहनत का फल	ब्रजेश कुमार तिवारी	23
12. शिष्टाचार	पंपा विश्वास	24
13. लॉकडाउन	के. रामबाबु	25
14. कनार्टक के पर्यटक स्थल	राकेश कुमार	26
15. घर आये मेहमान	टी. सुदर्शन रेड्डी	27
16. किस्सा एक काठ के उल्लू का	कृष्ण मूर्ति	28
17. चार मोमबतियां	जे. पोल डेनियल	29
18. मकड़ी, चींटी और जाला	राजेश कुमार	30
19. मां की ममता	अपूर्व सिंघल	32
20. शरारती चूहा	राजेश प्रियदर्शी	33
21. ओलंपिक: टोक्यो 2020	अभिषेक कुमार	34
22. डरपोक पत्थर	राजु पाल	35
23. सारे रिश्ते टूट गए	विनोद कुमार मीणा	36
24. संगति का असर	संजीव ल. भारमण्णवर	37
25. जोक्स	विचित्र वीर सिंह	38
26. खुनी झील	सियाराम मीना	39
27. चोरी की सजा	महन्तेश हुग्गी	40
28. बीज का घड़ा	रागिनी सिंह	41
29. बताओ तो जानें	एम. मनु	42
30. अनमोल सीख	विपिन कुमार	43
31. सच्चे साथी	अभिषेक आनंद	44
32. स्वर्ग की यात्रा	अजय अग्रवाल	45
33. सही समझ	संतोष कुमार	47
34. सौ ऊंट	उदयकुमार बी मनकट्टी	48
35. बुद्धिमान किसान	टी. वेंकट रथनैया	50
36. जिंदगी का बोझ	सरोज कुमार साह	51



हिन्दी पखवाड़ा समारोह -2020



हिन्दी पखवाड़ा समारोह -2020

1. कुत्ता और मुर्गा

एक बार एक मुर्गा जंगल में जा रहा था। रास्ते में उसे एक कुत्ता मिला। वे दोनों अच्छे दोस्त बन गए। दोनों ने एक साथ यात्रा करने का फैसला किया। वे लगातार रात होते तक चलते रहें।

रात में मुर्गा पेड़ के नीचे सो गया। मुर्गा सुबह उठकर बांग देने लगा। एक लोमड़ी ने उसकी बांग सुनी तो वहां आ गई और बोली - प्यारे मुर्गे! तुम तो बहुत अच्छा गाते हो।

नीचे आओ, मैं तुम्हें बधाई देना चाहती हूं। मुर्गे ने कहा - मुझे माफ करो, मैं नहीं आ सकता। इस होटल का दरबान सो रहा है। जब तक वह नहीं उठेगा, मैं नीचे नहीं आ सकता।

दुष्ट लोमड़ी ने कहा - मैं उसे अभी जगा देती हूं। तभी कुत्ता जाग गया और लोमड़ी को वहां पर देखकर जोर-जोर से उस पर भौंकने लगा। यह देखकर लोमड़ी डरकर वहां से भाग गई। कुत्ते और मुर्गे ने फिर से अपनी यात्रा शुरू की और वहां से चल दिए।

र. बद्दीनाथ

वरि. लेखा परीक्षा अधिकारी

2. दोस्त का महत्व

वेद गर्मी की छुट्टी में अपनी नानी के घर जाता है। वहां वेद को खूब मजा आता है, क्योंकि नानी के आम का बगीचा है। वहां वेद ढेर सारे आम खाता है और खेलता है। उसके पांच दोस्त भी हैं , पर उन्हें बेद आम नहीं खिलाता है।

एक दिन की बात है , वेद को खेलते खेलते चोट लग गई। वेद के दोस्तों ने वेद को उठाकर घर पहुंचाया और उसकी मम्मी से उसके चोट लगने की बात बताई , इस पर वेद को मालिश किया गया।

मम्मी ने उन दोस्तों को धन्यवाद किया और उन्हें ढेर सारे आम खिलाएं। वेद जब ठीक हुआ तो उसे दोस्त का महत्व समझ में आ गया था। अब वह उनके साथ खेलता और खूब आम खाता था।

नैतिक शिक्षा - दोस्त सुख - दुःख के साथी होते हैं। उनसे प्यार करना चाहिए कोई बात छुपाना नहीं चाहिए।

डी. एम. महांतेश
वरि. लेखा परीक्षा अधिकारी

3. चतुर सियार

एक बार की बात है एक गांव में एक बैल रहता था। जिसको घूमना बहुत पसंद था। वह घूमता घूमता जंगल में जा पहुंचा और आते समय गांव का रास्ता भूल गया। वह चलता हुआ एक तालाब के पास पहुंचा।

जहाँ पर उसने पानी पिया और वहाँ की हरी हरी घास खायी। जिसको खाकर वह बहुत खुश हुआ और ऊपर मुँह करके चिल्लाने लगा। उसी समय जंगल का राजा शेर तालाब की ओर पानी पिने जा रहा था।

जब शेर ने बैल की भयानक आवाज़ सुनी तो उसने सोचा जरूर जंगल में कोई खतरनाक जानवर आ गया है। इसलिए शेर बिना पानी पिए ही अपनी गुफा की तरफ भागने लगा। शेर को इस तरह डर कर भागते हुए 2 सियार ने देख लिया।

वह शेर के मंत्री बनना चाहते थे। उनने सोचा यही सही समय है शेर का भरोसा जितने का। दोनों सियार शेर की गुफा में गए और बोले हमने आपको डर कर गुफा की ओर आते हुए देखा था। आप जिस आवाज़ से डर रहे थे वह एक बैल की थी।

यदि आप चाहे तो हम उसको लेकर आपके पास आ सकते हैं। शेर की आज्ञा से दोनों बैल को अपने साथ लेकर आ गए और शेर से मिलाया। कुछ समय बाद शेर और बैल बहुत ही अच्छे मित्र बन गए।

शेर ने बैल को अपना सलाहकार रख लिया। यह बात जानकर दोनों सियार उनकी दोस्ती से जलने लगे क्योंकि उनने जो मंत्री बनने का सोचा था वह भी नहीं हुआ। दोनों सियार ने तरकीब निकाली और शेर के पास गए।

वह शेर से बोले बैल आपसे केवल मित्रता का दिखावा करता है। लेकिन हमने उसके मुँह से सुना है वह आपको अपने दोनों बड़े सींगो से मारकर जंगल का राजा बनना चाहता है। पहले तो शेर ने विश्वास नहीं किया लेकिन उसको ऐसा लगने लगा।

दोनों सियार इसके बाद बैल के पास गए। वह बैल से बोले शेर तुमसे केवल मित्रता का दिखावा करता है। मौका मिलने पर वह तुमको मार कर खा जायेगा। बैल को यह जानकर बहुत गुस्सा आया और वह शेर से मिलने के लिए जाने लगा।

सियार पहले ही शेर के पास जाकर बोले की बैल आपको मारने के लिए आ रहा है। बैल को गुस्से में आता देख शेर ने सियार की बात सच समझी और बैल पर हमला कर दिया। बैल ने भी शेर पर हमला किया और दोनों आपस में लड़ने लगे। अंत में शेर ने बैल को मार दिया और दोनों सियारों को अपना मंत्री बना लिया।

एच. परमशिक्व्याह
वरि. लेखा परीक्षा अधिकारी

4. आज ही क्यों नहीं ?

एक बार की बात है कि एक शिष्य अपने गुरु का बहुत आदर-सम्मान किया करता था। गुरु भी अपने इस शिष्य से बहुत स्नेह करते थे लेकिन वह शिष्य अपने अध्ययन के प्रति आलसी और स्वभाव से दीर्घसूत्री था। सदा स्वाध्याय से दूर भागने की कोशिश करता तथा आज के काम को कल के लिए छोड़ दिया करता था। अब गुरुजी कुछ चिंतित रहने लगे कि कहीं उनका यह शिष्य जीवन-संग्राम में पराजित न हो जाये। आलस्य में व्यक्ति को अकर्मण्य बनाने की पूरी सामर्थ्य होती है। ऐसा व्यक्ति बिना परिश्रम के ही फलोपभोग की कामना करता है। वह शीघ्र निर्णय नहीं ले सकता और यदि ले भी लेता है, तो उसे कार्यान्वित नहीं कर पाता। यहाँ तक कि अपने पर्यावरण के प्रति भी सजग नहीं रहता है और न भाग्य द्वारा प्रदत्त सुअवसरों का लाभ उठाने की कला में ही प्रवीण हो पता है। उन्होंने मन ही मन अपने शिष्य के कल्याण के लिए एक योजना बना ली। एक दिन एक काले पत्थर का एक टुकड़ा उसके हाथ में देते हुए गुरु जी ने कहा - 'मैं तुम्हें यह जादुई पत्थर का टुकड़ा, दो दिन के लिए दे कर, कहीं दूसरे गाँव जा रहा हूँ। जिस भी लोहे की वस्तु को तुम इससे स्पर्श करोगे, वह स्वर्ण में परिवर्तित हो जायेगी। पर याद रहे कि दूसरे दिन सूर्यास्त के पश्चात मैं इसे तुमसे वापस ले लूँगा।' शिष्य इस सुअवसर को पाकर बड़ा प्रसन्न हुआ लेकिन आलसी होने के कारण उसने अपना पहला दिन यह कल्पना करते-करते बिता दिया कि जब उसके पास बहुत सारा स्वर्ण होगा तब वह कितना प्रसन्न, सुखी, समृद्ध और संतुष्ट रहेगा, इतने नौकर-चाकर होंगे कि उसे पानी पीने के लिए भी नहीं उठाना पड़ेगा। फिर दूसरे दिन जब वह प्रातःकाल जागा, उसे अच्छी तरह से स्मरण था कि आज स्वर्ण पाने का दूसरा और अंतिम दिन है। उसने मन में पक्का विचार किया कि आज वह गुरुजी द्वारा दिए गये काले पत्थर का लाभ जरूर उठाएगा। उसने निश्चय किया कि वो बाज़ार से लोहे के बड़े-बड़े सामान खरीद कर लायेगा और उन्हें स्वर्ण में परिवर्तित कर देगा। दिन बीतता गया, पर वह इसी सोच में बैठा रहा कि अभी तो बहुत समय है, कभी भी बाज़ार जाकर सामान लेता आएगा। उसने सोचा कि अब तो दोपहर का भोजन करने के पश्चात ही सामान लेने निकलूँगा। पर भोजन करने के बाद उसे विश्राम करने की आदत थी, और उसने बजाये उठ के मेहनत करने के थोड़ी देर आराम करना उचित समझा। पर आलस्य से परिपूर्ण उसका शरीर नींद की गहराइयों में खो गया, और जब वो उठा तो सूर्यास्त होने को था। अब वह जल्दी-जल्दी बाज़ार की तरफ भागने लगा, पर रास्ते में ही उसे गुरुजी मिल गए उनको देखते ही वह उनके

चरणों पर गिरकर, उस जादुई पत्थर को एक दिन और अपने पास रखने के लिए याचना करने लगा लेकिन गुरुजी नहीं माने और उस शिष्य का धनी होने का सपना चूर-चूर हो गया | पर इस घटना की वजह से शिष्य को एक बहुत बड़ी सीख मिल गयी: उसे अपने आलस्य पर पछतावा होने लगा, वह समझ गया कि आलस्य उसके जीवन के लिए एक अभिशाप है और उसने प्रण किया कि अब वो कभी भी काम से जी नहीं चुराएगा और एक कर्मठ, सजग और सक्रिय व्यक्ति बन कर दिखायेगा।

मित्रों, जीवन में हर किसी को एक से बढ़कर एक अवसर मिलते हैं , पर कई लोग इन्हें बस अपने आलस्य के कारण गवां देते हैं। इसलिए मैं यही कहना चाहती हूँ कि यदि आप सफल, सुखी, भाग्यशाली, धनी अथवा महान बनना चाहते हैं तो आलस्य और दीर्घसूत्रता को त्यागकर, अपने अंदर विवेक, कष्टसाध्य श्रम, और सतत् जागरूकता जैसे गुणों को विकसित कीजिये और जब कभी आपके मन में किसी आवश्यक काम को टालने का विचार आये तो स्वयं से एक प्रश्न कीजिये - “आज ही क्यों नहीं ?”

श्रीकांत
वरि. लेखा परीक्षा अधिकारी

5. जैसी करनी, वैसी भरनी

गांव में एक निर्धन किसान रहता था। उसके पास खेती-बाड़ी के लिए जमीन तो थी, पर उस जमीन पर फसल अच्छी ना होने के कारण वह बेचारा परेशान रहता था।

एक दिन गर्मी के मौसम में वह अपने खेत पर पेड़ की छाया में आराम कर रहा था कि वह देखता है एक बिल में से सांप निकला और फन फैलाकर खड़ा हो गया।

अचानक किसान को संदेह हुआ, हो-न-हो इस सांप के कारण ही मेरी खेती बिगड़ रही है, इसलिए मुझे इसकी सेवा चाकरी करनी होगी।

यह विचार आते ही वह कहीं से दूध लाया और उसे एक बर्तन में डालकर बिल के पास रख दिया। अगले दिन जब वह बिल के पास गया तो देखता है, बर्तन में दूध नहीं है बल्कि उसमें एक सोने की मुहर पड़ी है।

मुहर पाकर उसे बड़ी खुशी हुई। उस दिन से वह रोजाना बर्तन में दूध लेकर जाता और बिल के पास रख देता और अगले दिन उसे नियमित सोने की एक मुहर मिल जाती।

संयोग से किसान को एक दिन के लिए कहीं बाहर जाना था। वह बड़ी दुविधा में पड़ गया कि सांप को दूध कौन देगा? बहुत सोच-विचार कर उसने अपने बेटे से इस बात की चर्चा की और दूध रख आने को कहा।

किसान के बताए अनुसार बेटे ने वैसा ही किया। लेकिन जब उसने दूध के बर्तन में मुहर देखी तो वह सोचने लगा जरूर यहां ज़मीन में बहुत-सी मुहरें दबी पड़ी होंगी, जिन पर यह सांप कब्जा जमाएं बैठा है और उन्हीं में से यह सांप रोज एक मुहर ले आता है। तो क्यों ना इस सांप को मारकर सारी मुहरों को ले लिया जाये।

दूसरे दिन किसान का बेटा जब दूध लेकर गया तो वहीं ठहर गया। थोड़ी देर में रोजाना की तरह सांप बाहर निकल आया तो उसने बड़े जोर से सांप को डंडा मारा, लेकिन निशाना चूक गया। डंडा सांप को लगा ही नहीं और सांप ने उछलकर तुरंत उसे काट लिया। थोड़े ही अंतराल में लड़का मर गया।

दूसरे दिन जब लड़के का बाप लौटकर आया और उसने बेटे की करनी और मृत्यु का समाचार सुना तो उसे बड़ा दुख हुआ। पर उसने कहा - “जो जैसा करता है, उसे वैसा ही फल मिलता है।”

इसलिए हमेशा इस बात का स्मरण रहे “जैसी करनी, वैसी भरनी” लालच का अंत ऐसा ही होता है।

राजेश बी. नंदगड़
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

6. याना

परिचय:

याना भारत के कर्नाटक के सिरसी और कुमता उत्तर कन्नड़ जिले के जंगलों में स्थित एक गाँव है जो असामान्य कार्स्ट (Karst) रॉक संरचनाओं के लिए जाना जाता है। यह पश्चिमी घाट की सहयाद्री पर्वत श्रृंखला में, कारवार बंदरगाह से लगभग 60 किलोमीटर (37 मील), सिरसी से 39 किलोमीटर (24 मील) और कुमता से 31 किलोमीटर (19 मील) दूर स्थित है। याना दुनिया के सबसे गीले गाँवों में से एक है और यह कर्नाटक का सबसे स्वच्छ गाँव और भारत का दूसरा सबसे स्वच्छ गाँव है। गाँव के पास दो अनोखी चट्टानें एक पर्यटक आकर्षण हैं और निकटतम सड़क के शीर्ष से 0।5 किलोमीटर (0।31 मील) घने जंगलों के माध्यम से एक छोटे से ट्रेक द्वारा आसानी से पहुंचा जा सकता है।

याना इन दो विशाल चट्टानों के लिए प्रसिद्ध है जिन्हें भैरवेश्वर शिखर और मोहिनी शिखर ("शिखर" का अर्थ "पहाड़ी") के रूप में जाना जाता है। विशाल चट्टानें ठोस काले, क्रिस्टलीय करास्ट चूना पत्थर (crystalline karst limestone) से बनी हैं। भैरवेश्वर शिखर की ऊंचाई 120 मीटर (390 फीट) है, जबकि मोहिनी शिखर, जो छोटा है, ऊंचाई में 90 मीटर (300 फीट) है। भैरवेश्वर शिखर के नीचे गुफा मंदिर के कारण याना को तीर्थस्थल के रूप में भी जाना जाता है, जहां एक स्वयंभू ("स्वयं प्रकट", या "जो अपने स्वयं के समझौते से बनाया गया है") लिंग का गठन किया गया है। शिवलिंग की छत से पानी टपकता है, जिससे स्थान की पवित्रता बढ़ जाती है।

शिवरात्रि के दौरान यहां आयोजित होने वाले वार्षिक उत्सवों के दौरान, एक कार उत्सव भी आयोजित किया जाता है। यह स्थान और आसपास की पहाड़ियाँ हमेशा हरे-भरे प्राकृतिक जंगल के लिए भी जानी जाती हैं।

भूगोल:

घने जंगलों और झरनों से घिरी दो चट्टानें मोनोलिथ या पहाड़ियाँ, याना गाँव के पास के क्षेत्र से तेजी से ऊपर उठती हैं। वे दक्षिण भारत में पश्चिमी घाट में सहयाद्री पर्वत श्रृंखला का हिस्सा हैं और याना और पूरी पहाड़ी श्रृंखला को एक विशिष्ट पहचान देते हैं। पहली चट्टान पहाड़ी, भैरवेश्वर शिखर में, चट्टान के मुख में 3 मीटर (9।8 फीट) चौड़ा उद्घाटन है जो एक गुफा की ओर जाता है। गुफा के भीतर, देवी दुर्गा के अवतार 'चंडिका' की एक कांस्य (Bronze) प्रतिमा है। गुफा में एक स्वयंभू ("स्वयं प्रकट") शिव लिंग ("शिव का प्रतीक") है, जिसके ऊपर सुरंग की छत से झरने का पानी बहता है। एक छोटी सी धारा के रूप में उभरती हुई, जिसे चंडीहोल कहा जाता है, यह अंततः उप्पिनपट्टन में अघनाशिनी नदी में मिल जाती है। स्थानीय लोग इसे गंगोदभव (उभरती गंगा) नदी के उद्भव के रूप में व्याख्या करते हैं। 3 किमी के दायरे में लगभग 61 चूना पत्थर रॉक संरचनाएं हैं, जिनमें से दो उल्लेखनीय आकार की हैं।

गुफा में शिव लिंग की प्राकृतिक रचना का श्रेय वैज्ञानिकों द्वारा चूना पत्थर की संरचनाओं में स्टैलेक्टाइट्स और स्टैलेग्माइट्स द्वारा गठित भूवैज्ञानिक घटना को दिया जाता है। सीमेंट कारखाने जैसे उद्योगों के लिए चट्टानों का उपयोग करने का प्रस्ताव था।

लगभग 8 किमी की दूरी पर स्थित एक प्राकृतिक जलप्रपात जिसे विभूति जलप्रपात ("विभूति" का अर्थ "राख") के रूप में जाना जाता है, भी पर्यटकों को आकर्षित करता है। इसका नाम इसलिए पड़ा क्योंकि इसकी तीसरी बूंद, धारा जो मुख्य दृष्टि से दिखाई नहीं देती है, तीन धाराओं में विभाजित है, विभूति से मिलती-जुलती है।

इतिहास:

ईस्ट इंडिया कंपनी के एक ब्रिटिश अधिकारी फ्रांसिस बुकानन-हैमिल्टन ने 1801 में इस स्थल का सर्वेक्षण किया था। उस समय, उनकी रिपोर्ट के अनुसार, इस जगह और उसके आसपास की आबादी दस हजार से अधिक थी। वर्षों से, लोग अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाने के लिए अन्य क्षेत्रों में चले गए हैं। वर्तमान में, इस स्थान पर केवल कुछ ही परिवार रहते हैं, उनमें से एक पुजारी ("पुजारी") परिवार है। 16 किमी के ट्रेक के साथ, याना २०वीं शताब्दी के दौरान एक ट्रेकर के लिए आनंददायक था। जब एक लोकप्रिय कन्नड़ फिल्म, नम्मुरा मंदरा हूव की शूटिंग यहां की गई और हर मौसम में आसान पहुंच प्रदान करने वाली सड़क बनाई गई, तो यह स्थान प्रसिद्ध हो गया और हर हफ्ते हजारों पर्यटकों को आकर्षित करता है।

दंतकथा:

हिंदू पौराणिक कथाएं इस स्थान को असुर, या राक्षस राजा भस्मासुर के जीवन की एक घटना से जोड़ती हैं। भस्मासुर ने कठोर तपस्या करके भगवान शिव से वरदान प्राप्त किया। इस वरदान ने ऐसा किया कि जब भस्मासुर किसी के सिर पर हाथ रखता, तो वह उन्हें जलाकर भस्म कर देता। आगे यह भी कहा गया है कि भस्मासुर अपनी शक्तियों का परीक्षण करने के लिए अपने संरक्षक भगवान शिव के सिर पर हाथ रखना चाहता था। उन्होंने शिव का पीछा किया, जिससे शिव घबरा गए और उन्हें भगवान विष्णु की मदद लेने के लिए अपने स्वर्गीय निवास से पृथ्वी पर जाने के लिए प्रेरित किया। विष्णु ने शिव की मदद करने के लिए खुद को बदल लिया, मोहिनी नाम की सुंदर कन्या का रूप धारण किया जिसने भस्मासुर को अपनी सुंदरता से मोहित कर लिया। भस्मासुर मोहिनी से काफी प्रभावित था, और उसने एक नृत्य प्रतियोगिता के लिए जारी एक चुनौती के लिए हामी भर दी।

नृत्य प्रतियोगिता के दौरान, मोहिनी ने चतुराई से सिर पर हाथ रखकर एक नृत्य भांग ("मुद्रा") का प्रदर्शन किया। इस कृत्य की गंभीरता को महसूस किए बिना, राक्षस राजा ने भी अपना हाथ उसके सिर पर रखा और अपने ही हाथों की आग से नष्ट हो गया, वह राख में परिवर्तित हो गया। ऐसा माना जाता है कि इस अधिनियम के दौरान निकली आग इतनी भीषण थी कि याना क्षेत्र में चूना पत्थर की

संरचनाएं काली पड़ गईं। क्षेत्र में दो बड़े रॉक संरचनाओं के आसपास देखी गई ढीली काली मिट्टी या राख को भक्तों द्वारा किंवदंती के प्रमाण के रूप में उद्धृत किया जाता है, जो उन्हें आग के कारण और भस्मासुर की मृत्यु से उत्पन्न राख के रूप में देखते हैं। इस घटना के लिए दो पहाड़ियों का नाम भी रखा गया है: लंबी चोटी भैरवेश्वर शिखर ("शिव की पहाड़ी"), और छोटी चोटी, नीचे कुछ कदम नीचे, मोहिनी शिखर ("मोहिनी की पहाड़ी") है जहां देवी पार्वती की मूर्ति स्थापित है। पास में कई अन्य छोटी गुफाएं भी हैं। पास में ही एक गणेश मंदिर भी है।

(स्रोत: विकिपीडिया)

शैलेंद्र प्रजापति
सहायक लेखपरीक्षा अधिकारी

7. आरम्भ है प्रचंड बोले मस्तकों के झुंड

आरम्भ है प्रचंड
बोले मस्तकों के झुंड
आज जंग की घड़ी की तुम गुहार दो,
आन बान शान
या कि जान का हो दान
आज इक धनुष के बाण पे उतार दो।

मन करे सो प्राण दे
जो मन करे सो प्राण ले
वही तो एक सर्वशक्तिमान है,
कृष्ण की पुकार है
ये भागवत का सार है
कि युद्ध ही तो वीर का प्रमाण है,
कौरवों की भीड़ हो
या पांडवों का नीड़ हो
जो लड़ सका है वो ही तो महान है।

जीत की हवस नहीं
किसी पे कोई वश नहीं
क्या जिन्दगी है ठोकरों पे मार दो,
मौत अंत है नहीं
तो मौत से भी क्यों डरें
ये जा के आसमान में दहाड़ दो।

वो दया का भाव
या कि शौर्य का चुनाव
या कि हार का वो घाव, तुम ये सोच लो,
या कि पूरे भाल पे
जला रहे विजय का लाल
लाल यह गुलाल, तुम ये सोच लो,

रंग केसरी हो
या मृदंग केसरी हो
या कि केसरी हो ताल, तुम ये सोच लो।

जिस कवि की कल्पना में
जिंदगी हो प्रेम गीत
उस कवि को आज तुम नकार दो,
भीगती मसों में आज
फूलती रगों में आज
आग की लपट का तुम बघार दो।

आरम्भ है प्रचंड
बोले मस्तकों के झुंड
आज जंग की घड़ी की तुम गुहार दो,
आन बान शान
या कि जान का हो दान
आज इक धनुष के बाण पे उतार दो।

पीयूष पपनेजा
सहायक लेखपरीक्षा अधिकारी

8. फिर पंछी चहचहाएगी

विपदा की घडी आयी है

घनघोर उदासी छाई है।

हर तरफ है मातम लाचारी का

सांसों पर बन आयी है।

काम न आ रहे धन दौलत अब,

काम न आ रही औदायी है।

लाचारी के इस अंधेरों को चीर

रहे कुछ अनुयायी है।

अवीरल निसकाम सेवा उनका छोड के

अपने घर-द्वार

प्राणों की परवाह न उनको कर रहे शत्रु संहार।

जज्बा उनका बडा महान,

बढा रहे इस देश की मान।

हम भी चलो कुछ हाथ बटायें, रह के अपने आशीयाने में।

फिर पंछी चहचहाएगी, फिर पंछी चहचहाएगी।

संजीत कुमार झा
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

9. ईमानदारी सर्वोच्च नीति है

एक राहुल नाम का व्यक्ति था | स्वभाव से बहुत ही गंभीर था | उसकी पढाई पूरी हो चुकी थी लेकिन कोई नौकरी नहीं थी | दिन रात वो काम की तलाश में इधर - उधर भटकता रहता था | राहुल एक ईमानदार मनुष्य भी था इसलिये भी उसे काम मिलने में मुश्किल आ रही थी | दिन इतने खराब हो चुके थे कि उसे मजदूरी करनी पड़ी | रोजी रोटी के लिए उसके पास अब कोई विकल्प नहीं था | राहुल पढ़ा लिखा था जो उसके व्यवहार से साफ जाहिर होता था |

एक दिन एक सेठ के घर राहुल मजदूरी कर रहा था | सेठ का ध्यान राहुल के उपर ही था | सेठ को समझ आ रहा था कि राहुल एक पढ़ा लिखा समझदार लड़का हैं लेकिन परिस्थिती वश उसे ऐसे मजदूरी के काम करना पड़ रहा हैं | सेठ को अपने एक विशेष काम के लिए एक ईमानदार व्यक्ति की जरूरत थी | उसने राहुल की परीक्षा लेने की सोची | उसने एक दिन राहुल को अपने पास बुलाया और उसे पचास हजार रुपये दिए जिसमें सो-सो के नोट थे और कहा भाई तुम ईमानदार लगते हो ये पैसे मेरे एक व्यापारी को दे आओ | राहुल ने ईमानदारी से पैसे पहुँचा दिए |

दूसरे दिन, व्यापारी ने राहुल को फिर से पैसे दिए इस बार उसने राहुल को बिना गिने पैसे दिए कहा खुद ही गिन लो और व्यापारी को दे आओ | राहुल ने ईमानदारी से काम किया |

सेठ पहले से ही गल्ले में पैसे गिनकर रखता था पर वो राहुल की ईमानदारी की परीक्षा लेना चाहता था | रोज वो सेठ उसे पैसे देने भेजता था |

राहुल की माली हालत तो बहुत ही खराब थी | एक दिन उसकी नियत डोल गयी और उसने सो रुपये चुरा लिए | जिसका पता सेठ को लग गया पर सेठ ने कुछ नहीं कहा | फिर से राहुल को रुपये देने भेजा | सेठ के कुछ न कहने पर राहुल की हिम्मत बढ़ गयी | उसने रोजाना चोरी शुरू कर दिया |

सेठ को उम्मीद थी कि राहुल उसे सच बोलेगा लेकिन राहुल ने नहीं बोला | एक दिन सेठ ने राहुल को काम से निकाल दिया | वास्तव में सेठ अपने जीवन का एक सहारा ढूँढ रहा था | उसकी कोई संतान नहीं थी | राहुल को भोला भाला जानकर उसने उसकी परीक्षा लेने की सोची थी | अगर राहुल सच बोलता तो सेठ उसे अपनी दुकान सौंप देता |

जब राहुल को इस बात का पता चला हैं तो उसे बहुत दुःख हुआ और उसके स्वीकारा कि कैसी भी परिस्थिती हो ईमानदारी ही सर्वोच्च नीति होती है |

मो. सलीम रजवी
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

10. ले आओ बरतन

एक बार राजा कृष्णदेव राय ने तेनालीराम से मजाक किया। उन्होंने तेनालीराम से कहा कि वह सारे दरबार को एक शानदार भोज दे। लेकिन तेनालीराम समझ गया कि महाराज उसे बेवकूफ बनाना चाहते हैं। तब भी उसने अपने चेहरे पर घबराहट नहीं आने दी। उसने कहा, “महाराज, आप कल सवेरे सारे दरबारियों सहित भोजन के लिए आमंत्रित हैं।”

निमंत्रण देने के एक घंटे बाद वह महाराज के पास फिर पहुंचा और बोला, “महाराज, मेरे घर इतने बरतन नहीं हैं कि मैं कई सौ लोगों को खाना खिला सकूं। यदि सारे अतिथि अपने साथ बरतन ले आएंगे, तो मुझे बड़ी सुविधा होगी।” राजा ने उसकी बात मान ली।

दूसरे दिन दरबारियों सहित राजा कृष्णदेव तेनालीराम के घर पहुंचे। सभी अपने-अपने घरों से सोने-चांदी के कीमती बरतन लेकर आए। जब सब भोजन करने लगे, तो तेनालीराम अपनी पत्नी कमला के साथ सबको पंखा झलने लगा। सबने तेनालीराम के भोजन की बड़ी तारीफ की। उत्तर में तेनालीराम ने कहा, “महाराज, अन्न आपका, पुण्य आपका। अपनी तो बस हवा-हवा है।” यह कहकर तेनालीराम पंखा झलने लगा।

भोजन करके सब उठने लगे, तो तेनालीराम ने हाथ जोड़कर कहा, “आप जूठे बरतन यहीं पड़े रहने दें। मैं उन्हें धुलवाकर आपके घरों में पहुंचा दूंगा।” अंधा क्या चाहे, दो आंखें। लोग तो यह चाहते ही थे। वे सब खुशी-खुशी अपने-अपने बरतन छोड़कर चले गए। लोगों ने एक दो-दिन अपने बरतनों की राह देखी। पर जब पूरा सप्ताह बीत गया, तो उनका माथा ठनका। राजा ने तेनालीराम को दरबार में बुलाकर उससे बरतनों के बारे में पूछा। तेनालीराम ने बड़ी गंभीरता से कहा, “महाराज, आप लोगों के बरतन नगर सेठ के घर पहुंच गए हैं। मैंने भोज के लिए उसी की दुकान से सामान खरीदा था। आप चाहें तो उसका पैसा चुकाकर अपने-अपने बरतन मंगवा लें।” राजा ने बड़ी हैरानी से पूछा, “क्यों?” तेनालीराम ने हंसते हुए कहा, “महाराज, मैंने तो पहले ही कह दिया था कि अन्न आपका, पुण्य आपका, अपनी तो बस हवा-हवा है।” इस वाक्य का असली अर्थ राजा ने समझा, तो उन्होंने सिर पीट लिया। उसके बाद राजा ने तेनालीराम को बेवकूफ बनाने की बात कभी नहीं सोची।

राजेश कुमार सिन्हा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

11. मेहनत का फल

एक गांव में दो मित्र नकुल और सोहन रहते थे। नकुल बहुत धार्मिक था और भगवान को बहुत मानता था। जबकि सोहन बहुत मेहनती थी। एक बार दोनों ने मिलकर एक बीघा जमीन खरीदी। जिससे वह बहुत फसल उगा कर अपना घर बनाना चाहते थे।

सोहन तो खेत में बहुत मेहनत करता लेकिन नकुल कुछ काम नहीं करता बल्कि मंदिर में जाकर भगवान से अच्छी फसल के लिए प्रार्थना करता था। इसी तरह समय बीतता गया। कुछ समय बाद खेत की फसल पक कर तैयार हो गयी।

जिसको दोनों ने बाजार ले जाकर बेच दिया और उनको अच्छा पैसा मिला। घर आकर सोहन ने नकुल को कहा की इस धन का ज्यादा हिस्सा मुझे मिलेगा क्योंकि मैंने खेत में ज्यादा मेहनत की है।

यह बात सुनकर नकुल बोला नहीं धन का तुमसे ज्यादा हिस्सा मुझे मिलना चाहिए क्योंकि मैंने भगवान से इसकी प्रार्थना की तभी हमको अच्छी फसल हुई। भगवान के बिना कुछ संभव नहीं है। जब वह दोनों इस बात को आपस में नहीं सुलझा सके तो धन के बँटवारे के लिए दोनों गांव के मुखिया के पास पहुंचे।

मुखिया ने दोनों की सारी बात सुनकर उन दोनों को एक - एक बोरा चावल का दिया जिसमें कंकड़ मिले हुए थे।

मुखिया ने कहा की कल सुबह तक तुम दोनों को इसमें से चावल और कंकड़ अलग करके लाने है तब मैं निर्णय करूँगा की इस धन का ज्यादा हिस्सा किसको मिलना चाहिए।

दोनों चावल की बोरी लेकर अपने घर चले गए। सोहन ने रात भर जागकर चावल और कंकड़ को अलग किया।

लेकिन नकुल चावल की बोरी को लेकर मंदिर में गया और भगवान से चावल में से कंकड़ अलग करने की प्रार्थना की।

अगले दिन सुबह सोहन जितने चावल और कंकड़ अलग कर सका उसको ले जाकर मुखिया के पास गया। जिसे देखकर मुखिया खुश हुआ। नकुल वैसी की वैसी बोरी को ले जाकर मुखिया के पास गया।

मुखिया ने नकुल को कहा की दिखाओ तुमने कितने चावल साफ किये है। नकुल ने कहा की मुझे भगवान पर पूरा भरोसा है की सारे चावल साफ हो गए होंगे। जब बोरी को खोला गया तो चावल और कंकड़ वैसे के वैसे ही थे।

जमींदार ने नकुल को कहा की भगवान भी तभी सहायता करते है जब तुम मेहनत करते हो। जमींदार ने धन का ज्यादा हिस्सा सोहन को दिया। इसके बाद नकुल भी सोहन की तरह खेत में मेहनत करने लगा और अबकी बार उनकी फसल पहले से भी अच्छी हुई।

सीख: इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है की हमें कभी भी भगवान के भरोसे नहीं बैठना चाहिए। हमें सफलता प्राप्त करने के लिए मेहनत करनी चाहिए।

ब्रजेश कुमार तिवारी
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

12. शिष्टाचार

स्वामी विवेकानंद जी ने कहा है कि-विश्व में अधिकांश लोग इसलिए असफल हो जाते हैं, क्योंकि उनमें समय पर साहस का संचार नहीं हो पाता और वे भयभीत हो उठते हैं।

स्वामीजी की कही सभी बातें हमें उनके जीवन काल की घटनाओं में सजीव दिखाई देती हैं। उपरोक्त लिखे वाक्य को शिकागो की एक घटना ने सजीव कर दिया, किस तरह विपरीत परिस्थिती में भी उन्होंने भारत को गौरवान्वित किया। हमें बहुत गर्व होता है कि हम इस देश के निवासी हैं जहाँ विवेकानंद जी जैसे महान संतो का

मार्ग-दर्शन मिला। आज मैं आपके साथ शिकागो धर्म सम्मेलन से सम्बंधित एक छोटा सा वृत्तान्त बता रही हूँ जो भारतीय संस्कृति में समाहित शिष्टाचार की ओर इंगित करता है।

1893 में शिकागो में विश्व धर्म सम्मेलन चल रहा था। स्वामी विवेकानंद भी उसमें बोलने के लिए गये हुए थे। 11 सितंबर को स्वामी जी का व्याख्यान होना था। मंच पर ब्लैक बोर्ड पर लिखा हुआ था- हिन्दू धर्म - मुर्दा धर्म। कोई साधारण व्यक्ति इसे देखकर क्रोधित हो सकता था, पर स्वामी जी भला ऐसा कैसे कर सकते थे। वह बोलने के लिये खड़े हुए और उन्होंने सबसे पहले (अमरीकावासी बहिनों और भाईयों) शब्दों के साथ श्रोताओं को संबोधित किया। स्वामीजी के शब्द ने जादू कर दिया, पूरी सभा ने करतल ध्वनि से उनका स्वागत किया।

इस हर्ष का कारण था, स्त्रियों को पहला स्थान देना। स्वामी जी ने सारी वसुधा को अपना कुटुंब मानकर सबका स्वागत किया था। भारतीय संस्कृति में निहित शिष्टाचार का यह तरीका किसी को न सूझा था। इस बात का अच्छा प्रभाव पड़ा। श्रोता मंत्र मुग्ध उनको सुनते रहे, निर्धारित 5 मिनट कब बीत गया पता ही न चला। अध्यक्ष कार्डिनल गिबन्स ने और आगे बोलने का अनुरोध किया। स्वामीजी 20 मिनट से भी अधिक देर तक बोलते रहे।

स्वामीजी की धूम सारे अमेरिका में मच गई। देखते ही देखते हजारों लोग उनके शिष्य बन गए। और तो और, सम्मेलन में कभी शोर मचता तो यह कहकर श्रोताओं को शान्त कराया जाता कि यदि आप चुप रहेंगे तो स्वामी विवेकानंद जी का व्याख्यान सुनने का अवसर दिया जायेगा। सुनते ही सारी जनता शान्त हो कर बैठ जाती।

अपने व्याख्यान से स्वामीजी ने यह सिद्ध कर दिया कि हिन्दू धर्म भी श्रेष्ठ है, जिसमें सभी धर्मों को अपने अंदर समाहित करने की क्षमता है। भारतीय संस्कृति, किसी की अवमानना या निंदा नहीं करती। इस तरह स्वामी विवेकानंद जी ने सात समंदर पार भारतीय संस्कृति की ध्वजा फहराई।

पंजा विश्वास
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

13.लॉकडाउन

इस कोरोना काल में किसी को हम पूछ पड़े
कैसे हो भाई ?
सुनते ही मियां उठ खड़े झल्ला कर कहां-
घर के अंदर दुबक के पड़े हैं।
खिड़कियों से ही झांकते खड़े हैं,
ज्यादा से ज्यादा गैलरी तक दौड़ते,
फिर पीछे मुड़ पलंग पर, आह छोड़ते हैं।
समाचार देख लो तो फिर क्या कहना,
बिना कुछ किए ही निकलता है पसीना।
घड़ी भर में जी घबराता है गला सुख -सुख जाता है,
फिर कुछ ऐसे बोखला जाते हैं।
घर में भी मास्क लगाकर चक्कर काटते जाते हैं
और अपनों को ही संदेह की नजर से ताकते जाते हैं।
सेनीटाइजर लगा -लगा कर हाथ मलते जाते हैं,
और गंभीर होकर ये सोचते हैं कि यह वक्त भी गुजर जायेगा।
लोग एक दूसरे के गले मिलेंगे,
फिर से वह सुनहरा वक्त लौट आएगा,
तब तक इसी में आनंद ढूंढते हैं,
घर में ही रहकर जीवन को सुखमय करते हैं।

के. रामबाबु
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

14. कर्नाटक के पर्यटक स्थल

भारतीय राज्यों में कर्नाटक पर्यटन के उद्देश्य से चौथा सबसे प्रसिद्ध राज्य है। यह भौगोलिक तथा ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत ही धनी राज्य है। इस राज्य में एक तरफ तो प्राचीन शिल्प कला एवं सभ्यता की पूर्ण झलक देखने को मिलती है, वहीं दूसरी तरफ यह राज्य आधुनिकता की तरफ भी अग्रसर है।

ऊंची-ऊंची पर्वत श्रृंखलाओं तथा वन संपदा से घिरा हुआ यह राज्य प्राकृतिक रूप से बहुत खुबसूरत है। अध्यात्म की दृष्टि से भी यह राज्य बहुत महत्वपूर्ण है। खान पान एवं रहन सहन खासकर जलवायु के चलते भी यह राज्य पर्यटकों का ध्यान खूब आकर्षित करता है।

कर्नाटक राज्य बहुत ही बड़ा राज्य है साथ ही यहां कई ग्रामीण स्थल भी हैं। यहां पर प्राकृतिक, धार्मिक एवं ऐतिहासिक स्थलों का अनूठा संगम देखने को मिलता है। यह राज्य 15 राष्ट्रीय राज्य मार्गों से जुड़ा है एवं 2 इंटरनेशनल एवं घरेलू एअरपोर्ट भी है साथ ही 3600 किमी का रेल नेटवर्क पर्यटन को आकर्षक बनाता है।

1. मैसूर पैलेस इस पैलेस का निर्माण वाडेयार शासकों ने करवाया था। ताजमहल के बाद मैसूर पैलेस सर्वाधिक पर्यटकों को आकर्षित करने वाला है। यह पैलेस कर्नाटक राज्य के मैसूर जिले में स्थित है।

2. गोल गुंबज यह कर्नाटक के बिजापुर शहर में स्थित है। यह मकबरा है जो मुहम्मद आदिल शाह का है।

3. जोग फाल्स यह फाल शरावती नदी पर स्थित है। यह भारत का दूसरा बड़ा फाल है। वर्षा के समय यह स्थान काफी मनोहर हो जाता है जिसके चलते यह एक महत्वपूर्ण दर्शनीय स्थल माना जाता है।

4. बादामी गुफा मंदिर यह मंदिर कर्नाटक राज्य के उत्तरी हिस्से के बंगलोर जिले में स्थित है। इस गुफा मंदिर में चार हिंदु, एक जैन और एक बौद्ध गुफा मंदिर हैं। इस मंदिर का संबंध 6वीं शताब्दी से माना जाता है।

5. बंदिपुर नेशनल पार्क यह नेशनल पार्क कर्नाटक राज्य के बांदीपुर जिले के अवचित है। यह 800 कार्मिक क्षेत्रफल में फैला है। इस नेशनल पार्क की स्थापना 1973 में टाइगर रिजर्व के रूप में की गई थी।

इसके अलावे कर्नाटक के कई दर्शनीय स्थल हैं जिससे महाबलेखा मंदिर, दरिया दौलत बाग, मागोड फाल्स, होयस लेखा मंदिर, कूर्ग, हंपि, गोकर्ना, दांदेली, उडुपी एवं नदी आदि महत्वपूर्ण हैं।

इस तरह से हम देखते हैं कि कर्नाटक राज्य ऐतिहासिक, प्राकृतिक एवं धार्मिक पर्यटन स्थलों के दृष्टिकोण से बहुत ही समृद्ध राज्य है। सरकार द्वारा इनके संरक्षण एवं विकास के लिए कई प्रयास किए जा रहे हैं।

राकेश कुमार

सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

15. घर आये मेहमान

राहुल अपनी पत्नी सीमा और अपनी माँ के साथ रहता था। गर्मियों की छुट्टी में राहुल की बुआ, फूफा अपने लड़के सोनू के साथ उनके घर रहने आये। घर आते ही फूफा जी राहुल से बोले की यहाँ तो बहुत गर्मी है। घर में कोई AC नहीं है क्या? राहुल की माँ ने बोला भाईसाहब अभी कुछ दिन पहले ही राहुल ने अपने कमरे में AC लगवाया है। यह सुनते ही फूफा जी अपने बेटे से बोले की सारा सामान राहुल के कमरे में ले गए। राहुल और उसकी पत्नी सीमा चुप रहे क्योंकि उनने सोचा की कुछ दिनों की तो बात है।

इस तरह बुआ, फूफा जी को राहुल के घर रहते 1 महीना हो गया। राहुल ने अपनी माँ से पूछा की बुआ जी कब जाने वाली है। हम कब तक ऐसे ही हॉल में सोकर अपना गुजारा करेंगे। राहुल की माँ बोली बेटा रिश्तेदारी का मामला है। हम कुछ कह भी तो नहीं सकते। राहुल की पत्नी सीमा बोली वह सब तो ठीक है लेकिन उनका छोटा लड़का सोनू सारा दिन घर में उधम करता रहता है। कल तो उसने हमारा नया सोफा बुरी तरह फाड़ डाला। राहुल इस बात पर बहुत गुस्सा हुआ की नया सोफा फाड़ दिया। वह अपनी पत्नी से बोला तुम सोनू को ऐसा करने से रोकती क्यों नहीं। सीमा बोली जब से बुआ, फूफा जी आये है। कुछ कुछ खाने की डिमांड करते है। जिससे मेरा और माँ जी का सारा दिन तो रसोई में ही बीत जाता है।

राहुल ने कहा की मैं अभी जाकर फूफा जी से पूछता हूँ की वह आखिर कब जायेंगे। राहुल ने बातों बातों में फूफा जी से कहा की 1 महीना हो गया है। आपके जॉब की छुट्टियाँ तो खत्म हो गयी होंगी न।

फूफा जी बोले राहुल मैंने जॉब तो कब की छोड़ दी। अब तो मैं बिज़नेस करता हूँ और अब मैं इस शहर में भी कुछ बिज़नेस खोलने की सोच रहा हूँ। पहले इस शहर को अच्छे से समझ लूँ जिसमें 2-3 महीने तो लग ही जायेंगे।

यह सुनकर राहुल समझ गया की फूफा जी अभी जाने वाले नहीं है। उसने यह बात अपनी पत्नी और माँ को बताई। सीमा बोली जब घी सीधी ऊँगली से नहीं निकलता तो ऊँगली टेढ़ी करनी पड़ती है।

इनके साथ भी कुछ ऐसा ही करना होगा। आप यह काम अब मुझ पर छोड़ दीजिये। उसी रात बुआ और फूफा जी छत पर थे। तभी उनका लड़का सोनू चिल्लाता हुआ उनके पास गया और बोला की मैंने अभी एक चुड़ैल को देखा है।

तभी एक चुड़ैल वहाँ आ गयी और बुआ और फूफा जी को बोली की तुम में से कौन पहले मेरा भोजन बनना चाहेगा। चुड़ैल को देखकर वह बहुत डर गए और उस घर से भाग गए। उनके जाने के बाद सीमा ने अपना चुड़ैल का मुखौटा उतारा।

बुआ के परिवार के जाने के बाद सबने चैन की सास ली। सीमा की सास ने सीमा से कहा की तू तो बड़ी अच्छी चुड़ैल बनती है। यह कहकर सब हँसने लगे।

सीख: इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है की हमें किसी भी रिश्ते का ग़लत फायदा नहीं उठाना चाहिए। जिस तरह बुआ के परिवार ने अपनी रिश्तेदारी का ग़लत फायदा उठाया और दूसरों को परेशान किया।

टी. सुदर्शन रेड्डी
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

16. किस्सा एक काठ के उल्लू का

किसान का एक लड़का था। वह काठ का उल्लू था। एक बार खेत से घर जा रहा था। रास्ते में उसे एक घोड़ेवाला मिला। घोड़ा देखकर लड़के का जी चाहा कि वह उसे खरीद ले।

उसने घोड़ेवाले से पूछा, “क्यों भाई, इस घोड़े का क्या लोगे?” घोड़ेवाले ने कहा, “इसके पूरे सौ रुपए लगेंगे।” लड़का बोला, “मेरे पास तो सिर्फ पचास रुपए हैं।” घोड़ेवाले ने कहा, “दफा हो जाओ। यह घोड़ा है, गधा नहीं जो पचास रुपए में मिल जाए।”

लड़का सोचकर बोला, “भाई, हम ऐसा करते हैं-तुम मुझे घोड़ा दो, मैं ये पचास रुपए तुम्हें नकद देता हूँ।” “और बाकी के पचास?” “उसके बदले तुम अपना घोड़ा वापस ले लो।

सौदा कैसा रहा?” बात घोड़ेवाले की समझ में आ गई। वह कोई नेक आदमी तो था नहीं। पचास रुपए और घोड़ा लेकर वह वहाँ से बेखटके चल पड़ा। यहाँ लड़का भी बहुत खुश था।

वह टिक्-टिक् आवाज करता, घोड़ा हाँकने का खेल खेलता हुआ अपने घर आया। घर पहुँचकर बोला, “बापू- बापू! आज मैंने एक घोड़ा खरीदा।”

पिताजी ने पूछा, “कहाँ है घोड़ा?” लड़का बोला, “बापू, दरअसल बात यह हुई कि घोड़ा मैंने सौ रुपए में खरीदा, लेकिन मेरे पास तो सिर्फ पचास रुपए थे।

वह पचास रुपए मैंने घोड़ेवाले को दे दिए और बाकी के पचास के बदले मैंने उसे उसका घोड़ा लौटा दिया। हम अपने सिर पर बेकार कर्ज क्यों रखें?” पिताजी ने कहा, “वाहरे काठ के उल्लू, वाह! तेरी अक्ल के क्या कहने!”

कृष्ण मूर्ति
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

17.चार मोमबतियां

रात का समय था, चारों तरफ सन्नाटा पसरा हुआ था , नज़दीक ही एक कमरे में चार मोमबतियां जल रही थीं। एकांत पा कर आज वे एक दुसरे से दिल की बात कर रही थीं।

पहली मोमबती बोली, " मैं शांति हूँ , पर मुझे लगता है अब इस दुनिया को मेरी ज़रूरत नहीं है , हर तरफ आपाधापी और लूट-मार मची हुई है, मैं यहाँ अब और नहीं रह सकती। ..." और ऐसा कहते हुए , कुछ देर में वो मोमबती बुझ गयी।

दूसरी मोमबती बोली , " मैं विश्वास हूँ , और मुझे लगता है झूठ और फरेब के बीच मेरी भी यहाँ कोई ज़रूरत नहीं है , मैं भी यहाँ से जा रही हूँ ..." , और दूसरी मोमबती भी बुझ गयी।

तीसरी मोमबती भी दुखी होते हुए बोली , " मैं प्रेम हूँ, मेरे पास जलते रहने की ताकत है, पर आज हर कोई इतना व्यस्त है कि मेरे लिए किसी के पास वक्त ही नहीं, दूसरों से तो दूर लोग अपनों से भी प्रेम करना भूलते जा रहे हैं ,मैं ये सब और नहीं सह सकती मैं भी इस दुनिया से जा रही हूँ..." और ऐसा कहते हुए तीसरी मोमबती भी बुझ गयी।

वो अभी बुझी ही थी कि एक मासूम बच्चा उस कमरे में दाखिल हुआ।

मोमबतियों को बुझे देख वह घबरा गया , उसकी आँखों से आंसू टपकने लगे और वह रुंआसा होते हुए बोला "अरे , तुम मोमबतियां जल क्यों नहीं रही , तुम्हे तो अंत तक जलना है ! तुम इस तरह बीच में हमें कैसे छोड़ के जा सकती हो ?"

तभी चौथी मोमबती बोली , " प्यारे बच्चे घबराओ नहीं, मैं आशा हूँ और जब तक मैं जल रही हूँ हम बाकी मोमबतियों को फिर से जला सकते हैं। "

यह सुन बच्चे की आँखें चमक उठीं, और उसने आशा के बल पे शांति, विश्वास, और प्रेम को फिर से प्रकाशित कर दिया।

मित्रों , जब सबकुछ बुरा होते दिखे ,चारों तरफ अन्धकार ही अन्धकार नज़र आये , अपने भी पराये लगने लगे तो भी उम्मीद मत छोड़िये...।आशा मत छोड़िये , क्योंकि इसमें इतनी शक्ति है कि ये हर खोई हुई चीज आपको वापस दिल सकती है। अपनी आशा की मोमबती को जलाये रखिये ,बस अगर ये जलती रहेगी तो आप किसी भी और मोमबती को प्रकाशित कर सकते हैं।

जे. पोल डेनियल
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

18. मकड़ी, चींटी और जाला

एक मकड़ी थी। उसने आराम से रहने के लिए एक शानदार जाला बनाने का विचार किया और सोचा की इस जाले में खूब कीड़े, मक्खियाँ फसेंगी और मैं उसे आहार बनाऊंगी और मजे से रहूंगी। उसने कमरे के एक कोने को पसंद किया और वहाँ जाला बुनना शुरू किया। कुछ देर बाद आधा जाला बुन कर तैयार हो गया। यह देखकर वह मकड़ी काफी खुश हुई कि तभी अचानक उसकी नजर एक बिल्ली पर पड़ी जो उसे देखकर हँस रही थी।

मकड़ी को गुस्सा आ गया और वह बिल्ली से बोली, “हँस क्यों रही हो?”

“हँसू नहीं तो क्या करूँ”, बिल्ली ने जवाब दिया, “यहाँ मक्खियाँ नहीं हैं ये जगह तो बिल्कुल साफ सुथरी है, यहाँ कौन आयेगा तेरे जाले में।”

ये बात मकड़ी के गले उतर गई। उसने अच्छी सलाह के लिये बिल्ली को धन्यवाद दिया और जाला अधूरा छोड़कर दूसरी जगह तलाश करने लगी। उसने ईधर ऊधर देखा। उसे एक खिड़की नजर आयी और फिर उसमें जाला बुनना शुरू किया कुछ देर तक वह जाला बुनती रही, तभी एक चिड़िया आयी और मकड़ी का मजाक उड़ाते हुए बोली, “अरे मकड़ी, तू भी कितनी बेवकूफ है।”

“क्यों?”, मकड़ी ने पूछा।

चिड़िया उसे समझाने लगी, “अरे यहाँ तो खिड़की से तेज हवा आती है। यहाँ तो तू अपने जाले के साथ ही उड़ जायेगी।”

मकड़ी को चिड़िया की बात ठीक लगी और वह वहाँ भी जाला अधूरा बना छोड़कर सोचने लगी अब कहाँ जाला बनायाँ जाये। समय काफी बीत चुका था और अब उसे भूख भी लगने लगी थी। अब उसे एक आलमारी का खुला दरवाजा दिखा और उसने उसी में अपना जाला बुनना शुरू किया। कुछ जाला बुना ही था तभी उसे एक काक्रोच नजर आया जो जाले को अचरज भरे नजरो से देख रहा था।

मकड़ी ने पूछा - ‘इस तरह क्यों देख रहे हो?’

काक्रोच बोला- “अरे यहाँ कहाँ जाला बुनने चली आयी ये तो बेकार की आलमारी है। अभी ये यहाँ पड़ी है कुछ दिनों बाद इसे बेच दिया जायेगा और तुम्हारी सारी मेहनत बेकार चली जायेगी। यह सुन कर मकड़ी ने वहाँ से हट जाना ही बेहतर समझा।

बार-बार प्रयास करने से वह काफी थक चुकी थी और उसके अंदर जाला बुनने की ताकत ही नहीं बची थी। भूख की वजह से वह परेशान थी। उसे पछतावा हो रहा था कि अगर पहले ही जाला बुन लेती तो अच्छा रहता। पर अब वह कुछ नहीं कर सकती थी उसी हालत में पड़ी रही।

जब मकड़ी को लगा कि अब कुछ नहीं हो सकता है तो उसने पास से गुजर रही चींटी से मदद करने का आग्रह किया।

चींटी बोली, “मैं बहुत देर से तुम्हें देख रही थी, तुम बार-बार अपना काम शुरू करती और दूसरों के कहने पर उसे अधूरा छोड़ देती। और जो लोग ऐसा करते हैं, उनकी यही हालत होती है।” और ऐसा कहते हुए वह अपने रास्ते चली गई और मकड़ी पछताती हुई निढाल पड़ी रही।

दोस्तों, हमारी ज़िन्दगी में भी कई बार कुछ ऐसा ही होता है। हम कोई काम शुरू करते हैं। शुरू-शुरू में तो हम उस काम के लिये बड़े उत्साहित रहते हैं पर लोगों की टिप्पणी की वजह से उत्साह कम होने लगता है और हम अपना काम बीच में ही छोड़ देते हैं और जब बाद में पता चलता है कि हम अपने सफलता के कितने नजदीक थे तो बाद में पछतावे के अलावा कुछ नहीं बचता।

राजेश कुमार
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

19.माँ की ममता

अमरूद के पेड़ पर एक सुरीली नाम की चिड़िया रहती थी। उसने एक घोंसला बनाया था। जिसमें उसके बच्चे साथ में रहते थे। वह बच्चे अभी उड़न नहीं जानते थे , इसीलिए सुरीली उन सभी को खाना ला कर खिलाती थी। एक दिन जब बरसात हो रही थी। तभी सुरीली के बच्चों को भूख लगी। बच्चे खूब जोर से रोने लगे । सुरीली से अपने बच्चों के रोना अच्छा नहीं लग रहा था। वह उन्हें चुप करा रही थी , किंतु बच्चे भूख से तड़प रहे थे इसलिए वह चुप नहीं हो रहे थे। सुरीली सोच में पड़ गई , इतनी तेज बारिश में खाना कहां से लाऊंगी। मगर खाना नहीं लाया तो बच्चों का भूख कैसे शांत होगा। काफी देर सोचने के बाद सुरीली ने एक लंबी उड़ान भरी और रामू के घर पहुंच गई। रामू ने चावल दाल और फलों को आंगन में रखा हुआ था। चिड़िया ने देखा और बच्चों के लिए अपने मुंह में ढेर सारा चावल रख लिया। और झटपट वहां से उड़ गई। घोंसले में पहुंचकर चिड़िया ने सभी बच्चों को चावल का दाना खिलाया। बच्चों का पेट भर गया , वह सब चुप हो गए और आपस में खेलने लगे।

अपूर्व सिंघल

सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

20.शरारती चूहा

गोलू के घर में एक शरारती चूहा आ गया। वह बहुत छोटा सा था मगर सारे घर में भागा चलता था। उसने गोलू की किताब भी कुतर डाली थी। कुछ कपड़े भी कुतर दिए थे। गोलू की मम्मी जो खाना बनाती और बिना ढके रख देती , वह चूहा उसे भी चट कर जाता था। चूहा खा - पीकर बड़ा हो गया था। एक दिन गोलू की मम्मी ने एक बोतल में शरबत बनाकर रखा। शरारती चूहे की नज़र बोतल पर पड़ गयी। चूहा कई तरकीब लगाकर थक गया था , उसने शरबत पीना था। चूहा बोतल पर चढ़ा किसी तरह से ढक्कन को खोलने में सफल हो जाता है। अब उसमें चूहा मुंह घुसाने की कोशिश करता है। बोतल का मुंह छोटा था मुंह नहीं घुसता। फिर चूहे को आइडिया आया उसने अपनी पूंछ बोतल में डाली। पूंछ शरबत से गीली हो जाती है उसे चाट -चाट कर चूहे का पेट भर गया। अब वह गोलू के तकिए के नीचे बने अपने बिस्तर पर जा कर आराम से करने लगा।

नैतिक शिक्षा - मेहनत करने से कोई कार्य असम्भव नहीं होता।

राजेश प्रियदर्शी
सहायक पर्यवेक्षक

21.ओलंपिक: टोक्यो 2020

टोक्यो ओलंपिक खेलों का आरंभ 23 जुलाई, 2021 को हुआ जो 8 अगस्त, 2021 तक चला। ओलंपिक खेल हर चार साल के अंतराल में होते हैं। इस साल जापान के टोक्यो में इसका आयोजन हुआ। टोक्यो 1964 (ग्रीष्मकालीन), साप्पोरो 1972 (शीतकालीन) और नागानो 1998 (शीतकालीन) खेलों के बाद 2020 के खेल जापान में होने वाले चौथे ओलंपिक खेल हैं।

ओलंपिक में इस बार 33 खेलों में 339 मेडल के लिए मुकाबले होंगे। इस बार ओलंपिक में 5 नए खेल जोड़े गए हैं- सर्फिंग, स्केटबोर्डिंग, स्पोर्ट्स क्लाइंबिंग, कराटे और बेसबॉल। भारत की ओर से टोक्यो ओलंपिक में 127 एथलीट हिस्सा ले रहे हैं। अब तक कुल 31 बार ओलंपिक खेलों का आयोजन किया जा चुका है।

टोक्यो में होने वाले ओलंपिक खेलों के शुभंकर को 'मिराइतोवा' और 'सोमेती' नाम दिया गया है। इसे खास जापानी इंडिगो ब्लू रंग का पैटर्न दिया गया है। यह जापान की सांस्कृतिक परंपरा और आधुनिकता दोनों का प्रतिनिधित्व करते हैं। 'मिराइतोवा' जापानी कहावत से प्रेरित है। जापानी शब्द मिराइतोवा में 'मिराइ' का अर्थ 'भविष्य' और तोवा का 'अनंत काल' होता है। टोक्यो ओलंपिक में खिलाड़ियों को दिए जाने वाले पदक पुराने इलेक्ट्रॉनिक सामानों और फ़ोन से बनाए हैं। पदक के पीछे के हिस्से में टोक्यो ओलंपिक का लोगो लगा है, आगे स्टेडियम की तस्वीर के सामने विजय का प्रतीक माने जाने वाली ग्रीक देवी 'नाइक' को दर्शाया गया है।

इस बार ओलंपिक में भारत का प्रदर्शन बहुत ऐतिहासिक रहा।

ओलंपिक में जहां भारत ने सबसे ज्यादा मेडल जीतने का रिकॉर्ड बनाया, वहीं नीरज चोपड़ा ने जेवलिन थ्रो में गोल्ड मेडल जीता। भारत ने इस बार कुल सात मेडल जीते, जिसमें 1 गोल्ड, 2 सिल्वर और 4 ब्रॉन्ज रहे।

अभिषेक कुमार
सहायक पर्यवेक्षक

22. डरपोक पत्थर

बहुत पहले की बात है एक शिल्पकार मूर्ति बनाने के लिए जंगल में पत्थर ढूँढने गया। वहाँ उसको एक बहुत ही अच्छा पत्थर मिल गया। जिसको देखकर वह बहुत खुश हुआ और कहा यह मूर्ति बनाने के लिए बहुत ही सही है।

जब वह आ रहा था तो उसको एक और पत्थर मिला उसने उस पत्थर को भी अपने साथ ले लिया। घर जाकर उसने पत्थर को उठा कर अपने औजारों से उस पर कारीगरी करनी शुरू कर दिया।

औजारों की चोट जब पत्थर पर हुई तो वह पत्थर बोलने लगा की मुझको छोड़ दो इससे मुझे बहुत दर्द हो रहा है। अगर तुम मुझ पर चोट करोगे तो मैं बिखर कर अलग हो जाऊंगा। तुम किसी और पत्थर पर मूर्ति बना लो।

पत्थर की बात सुनकर शिल्पकार को दया आ गयी। उसने पत्थर को छोड़ दिया और दूसरे पत्थर को लेकर मूर्ति बनाने लगा। वह पत्थर कुछ नहीं बोला। कुछ समय में शिल्पकार ने उस पत्थर से बहुत अच्छी भगवान की मूर्ति बना दी।

गांव के लोग मूर्ति बनने के बाद उसको लेने आये। उनमें सोचा की हमें नारियल फोड़ने के लिए एक और पत्थर की जरूरत होगी। उन्होंने वहाँ रखे पहले पत्थर को भी अपने साथ ले लिया। मूर्ति को ले जाकर उन्होंने मंदिर में सजा दिया और उसके सामने उसी पत्थर को रख दिया।

अब जब भी कोई व्यक्ति मंदिर में दर्शन करने आता तो मूर्ति को फूलों से पूजा करता, दूध से स्नान कराता और उस पत्थर पर नारियल फोड़ता था। जब लोग उस पत्थर पर नारियल फोड़ते तो बहुत परेशान होता।

उसको दर्द होता और वह चिल्लाता लेकिन कोई उसकी सुनने वाला नहीं था। उस पत्थर ने मूर्ति बने पत्थर से बात करी और कहा की तुम तो बड़े मजे से हो लोग तो तुम्हारी पूजा करते हैं। तुमको दूध से स्नान कराते हैं और लड्डुओं का प्रसाद चढ़ाते हैं।

लेकिन मेरी तो किस्मत ही खराब है मुझ पर लोग नारियल फोड़ कर जाते हैं। इस पर मूर्ति बने पत्थर ने कहा की जब शिल्पकार तुम पर कारीगरी कर रहा था यदि तुम उस समय उसको नहीं रोकते तो आज मेरी जगह तुम होते।

लेकिन तुमने आसान रास्ता चुना इसलिए अभी तुम दुःख उठा रहे हो। उस पत्थर को मूर्ति बने पत्थर की बात समझ आ गयी थी। उसने कहा की अब से मैं भी कोई शिकायत नहीं करूँगा। इसके बाद लोग आकर उस पर नारियल फोड़ते।

नारियल टूटने से उस पर भी नारियल का पानी गिरता और अब लोग मूर्ति को प्रसाद का भोग लगाकर उस पत्थर पर रखने लगे।

सीख: हमें कभी भी कठिन परिस्थितियों से घबराना नहीं चाहिए।

राजु पाल
सहायक पर्यवेक्षक

23. सारे रिश्ते टूट गए

एक बार एक बहुत सुन्दर लड़की थी पर उसे गुस्सा बहुत आता था। गुस्से में वह किसी से कुछ भी कह देती। घर के सबलोग उसकी इस आदत से बहुत परेशां थे। एक बार उसके पिता ने उसे सबक सिखाने की सोचा। उसके पिता ने उसे कुछ कील और हतोड़ा दिया और कहा एक महीने तक हम एक एक्टिविटी करेंगे जिसमें तुम्हें बस एक महीने तक गुस्सा कम करना है उसके बाद तुम चाहो जितना गुस्सा कर सकती हो। और जब भी तुम्हें गुस्सा आये और तुम किसी से बुरी तरह बोल दो तो एक कील दीवार में लगा देना। और कोशिश करनी है गुस्सा कम करने की, लड़की तैयार हो गयी। उसे जब भी गुस्सा आता और वह किसी को कुछ बोल देती तो एक कील दीवार में लगा देती। पहले दिन उसने दीवार में ३० कील लगा दी। पर धीरे धीरे दीवार में लगने वाली कील काम होने लगी। १५ ही दिन में उस लड़की ने सबसे बुरी तरह बोलना काम कर दिया। अब उसके पिता ने उससे कहा की अगर तुम एक बार भी गुस्सा का करना होने पर किसी से बुरी तरह न बोलो तो अपने द्वारा लगायी हुई कील में से एक कील निकाल देना। लड़की ने वैसे ही किया। १ महीने के अंत तक दीवार से सब कील निकल गयी। लड़की बहुत खुश हुई की वो इस गेम में जीत गयी। और अपने पिता जी से कहने लगी, देखिये सब कील दीवार से निकल गयी। उसके पिता ने कहा दीवार से कील तो निकल गयी पर क्या दीवार पहले जैसी सुन्दर दिख रही है। दीवार में जगह जगह निशान पढ़ गए हैं। पिता ने अपनी बेटी को समझाया इसी तरह जब तुम किसी पर गुस्सा करती हो तो तुम्हारे रिश्तो में भी खराब निशान छूट ही जाते हैं। और एक दिन यही निशान रिस्तो को भी खराब कर देते हैं लड़की के बात समझ में आ गयी और उसने उस दिन से गुस्सा करना बहुत कम कर दिया।

हम जिस पर गुस्सा कर सकते हैं उससे बहुत उल्टा सीधा कह देते हैं और अपने रिश्तो को खराब कर देते हैं। गुस्सा करने की हम आदत बना लेते हैं। जैसे की हमें किसी ने कुछ कह दिया हम उससे कुछ नहीं कह सकते तो घर आकर बच्चो को बिना किसी गलती के ही डांट देते हैं। इसलिए अपनी इस खराब आदत को रिश्तो के खराब होने से पहले ही सुधार लीजिये।

विनोद कुमार मीणा
वरिष्ठ लेखा परीक्षक

24.संगति का असर

एक बार एक राजा शिकार के उद्देश्य से अपने काफिले के साथ किसी जंगल से गुजर रहा था। दूर-दूर तक शिकार नजर नहीं आ रहा था, वे धीरे धीरे घनघोर जंगल में प्रवेश करते गए। अभी कुछ ही दूर गए थे की उन्हें कुछ डाकुओं के छिपने की जगह दिखाई दी। जैसे ही वे उसके पास पहुंचे कि पास के पेड़ पर बैठा तोता बोल पड़ा -

पकड़ो पकड़ो एक राजा आ रहा है इसके पास बहुत सारा सामान है लूटो लूटो जल्दी आओ जल्दी आओ।

तोते की आवाज सुनकर सभी डाकू राजा की ओर दौड़ पड़े। डाकुओं को अपनी ओर आते देख कर राजा और उसके सैनिक दौड़ कर भाग खड़े हुए। भागते-भागते कोसो दूर निकल गए। सामने एक बड़ा सा पेड़ दिखाई दिया। कुछ देर सुस्ताने के लिए उस पेड़ के पास चले गए , जैसे ही पेड़ के पास पहुंचे कि उस पेड़ पर बैठा तोता बोल पड़ा -

आओ राजन हमारे साधु महात्मा की कुटी में आपका स्वागत है। अन्दर आइये पानी पीजिये और विश्राम कर लीजिये।

तोते की इस बात को सुनकर राजा हैरत में पड़ गया , और सोचने लगा की एक ही जाति के दो प्राणियों का व्यवहार इतना अलग-अलग कैसे हो सकता है। राजा को कुछ समझ नहीं आ रहा था। वह तोते की बात मानकर अन्दर साधु की कुटिया की ओर चला गया, साधु महात्मा को प्रणाम कर उनके समीप बैठ गया और अपनी सारी कहानी सुनाई। और फिर धीरे से पूछा, “ऋषिवर इन दोनों तोतों के व्यवहार में आखिर इतना अंतर क्यों है।”

साधु महात्मा धैर्य से सारी बातें सुनी और बोले ,” ये कुछ नहीं राजन बस संगति का असर है। डाकुओं के साथ रहकर तोता भी डाकुओं की तरह व्यवहार करने लगा है और उनकी ही भाषा बोलने लगा है। अर्थात जो जिस वातावरण में रहता है वह वैसा ही बन जाता है कहने का तात्पर्य यह है कि मूर्ख भी विद्वानों के साथ रहकर विद्वान बन जाता है और अगर विद्वान भी मूर्खों के संगत में रहता है तो उसके अन्दर भी मूर्खता आ जाती है। इसिलिय हमें संगति सोच समझ कर करनी चाहिए।”

संजीव ल. भारमण्णवर
वरिष्ठ लेखा परीक्षक

25.जोक्स

पत्नी- तुम मुझे सोते हुए गाली दे रहे थे
पति- नहीं तुम्हें कोई गलतफहमी हुई है
पत्नी-क्या गलतफलमी?
पति- यही, "कि मैं सो रहा था"..
तब से वाकई मैं पति की नींद गायब है...

गणित की क्लास चल रही थी
टीचर ने पूछा- बताओं 1000 किलो = एक टन, तो 3000 किलों कितना होगा?
पप्पू- जी सर....टन, टन, टन
टीचर को समझ नहीं आ रहा कि शाबासी दूं या क्लास से बाहर निकालूं

मेहमान- और बताओ बेटा आगे का क्या प्लान है...
बच्चा- बस आपके जाते हैं बिस्कुट खाउंगा...
वैसे भी नमकीन और मेवा तो आपने छोड़ी नहीं है....

पत्नी- जब मैं इस घर में आई थी तब बहुत मच्छर थे...अब नहीं हैं ऐसा क्यों
पति- हमारी शादी के बाद मच्छरों ने ये कहकर मेरा घर छोड़ दिया...
कि अब खून पीने वाली आ गई है...
हमारे लिए तो कुछ बचेगा ही नहीं...

विचित्र वीर सिंह
वरिष्ठ लेखा परीक्षक

26.खुनी झील

एक बार की बात है एक जंगल में एक झील थी। जो खुनी झील के नाम से प्रसिद्ध थी। शाम के बाद कोई भी उस झील में पानी पिने के लिए जाता तो वापस नहीं आता था। एक दिन मुन्नू हिरण उस जंगल में रहने के लिए आया।

उसकी मुलाकात जंगल में मग्गू बन्दर से हुई। मग्गू बन्दर ने मुन्नूहिरण को जंगल के बारे में सब बताया लेकिन उस झील के बारे में बताना भूल गया। मग्गू बन्दर ने दूसरे दिन मुन्नूहिरण को जंगल के सभी जानवरों से मिलाया।

जंगल में मुन्नू हिरण का सबसे अच्छा दोस्त एक चीकू खरगोश बन गया। मुन्नू हिरण को जब ही प्यास लगती थी तो वह उस झील में पानी पिने जाता था। वह शाम को भी उसमें पानी पिने जाता था।

एक शाम को वह उस झील में पानी पिने गया तो उसने उसमें बड़ी तेज़ी से अपनी और आता हुआ एक मगरमच्छ देख लिया। जिसे देखकर वह बड़ी तेज़ी से जंगल की तरफ भागने लगा। रास्ते में उसको मग्गू बन्दर मिल गया।

मग्गू ने मुन्नूहिरण से इतनी तेज़ भागने का कारण पूछा। मुन्नूहिरण ने उसको सारी बात बताई। मग्गू बन्दर ने कहा की मैं तुमको बताना भूल गया था की वह एक खुनी झील है। जिसमें जो भी शाम के बाद जाता है वह वापिस नहीं आता।

लेकिन उस झील में मगरमच्छ क्या कर रहा है। उसे तो हमने कभी नहीं देखा। इसका मतलब वह मगरमच्छ ही सभी जानवरों को खाता है जो भी शाम के बाद उस झील में पानी पिने जाता है।

अगले दिन मग्गू बन्दर जंगल के सभी जानवरों को ले जाकर उस झील में गया। मगरमच्छ सभी जानवरों को आता देखकर छुप गया। लेकिन मगरमच्छ की पीठ अभी भी पानी से ऊपर दिखाई दे रही थी।

सभी जानवरों ने कहा की यह पानी के बाहर जो चीज़ दिखाई दे रही है वह मगरमच्छ है। यह सुनकर मगरमच्छ कुछ नहीं बोला। चीकू खरगोश ने दिमाग लगाया और बोला नहीं यह तो पत्थर है। लेकिन हम तभी मानेंगे जब यह खुद बताएगा।

यह सुनकर मगरमच्छ बोला की मैं एक पत्थर हूँ। इससे सभी जानवरों को पता लग गया की यह एक मगरमच्छ है। चीकू खरगोश ने मगरमच्छ को कहा की तुम इतना भी नहीं जानते की पत्थर बोला नहीं करते। इसके बाद सभी जानवरों ने मिलकर उस मगरमच्छ को उस झील से भगा दिया और खुशी खुशी रहने लगे।

सियाराम मीना
वरिष्ठ लेखा परीक्षक

27. चोरी की सजा

जब ज़ेन मास्टर बनकेइ ने ध्यान करना सिखाने का कैंप लगाया तो पूरे जापान से कई बच्चे उनसे सीखने आये। कैंप के दौरान ही एक दिन किसी छात्र को चोरी करते हुए पकड़ लिया गया। बनकेइ को ये बात बताई गयी, बाकी छात्रों ने अनुरोध किया की चोरी की सजा के रूप में इस छात्र को कैंप से निकाल दिया जाए।

पर बनकेइ ने इस पर ध्यान नहीं दिया और उसे और बच्चों के साथ पढ़ने दिया।

कुछ दिनों बाद फिर ऐसा ही हुआ, वही छात्र दुबारा चोरी करते हुए पकड़ा गया। एक बार फिर उसे बनकेइ के सामने ले जाया गया, पर सभी की उम्मीदों के विरुद्ध इस बार भी उन्होंने छात्र को कोई सजा नहीं सुनाई।

इस वजह से अन्य बच्चे क्रोधित हो उठे और सभी ने मिलकर बनकेइ को पत्र लिखा की यदि उस छात्र को नहीं निकाला जायेगा तो हम सब कैंप छोड़ कर चले जायेंगे।

बनकेइ ने पत्र पढ़ा और तुरंत ही सभी छात्रों को इकठ्ठा होने के लिए कहा। “आप सभी बुद्धिमान हैं।” बनकेइ ने बोलना शुरू किया, “आप जानते हैं की क्या सही है और क्या गलत। यदि आप कहीं और पढ़ने जाना चाहते हैं तो जा सकते हैं, पर ये बेचारा यह भी नहीं जानता की क्या सही है और क्या गलत। यदि इसे मैं नहीं पढ़ाऊंगा तो और कौन पढ़ायेगा? आप सभी चले भी जाएं तो भी मैं इसे यहाँ पढ़ाऊंगा।”

यह सुनकर चोरी करने वाला छात्र फूट-फूट कर रोने लगा। अब उसके अन्दर से चोरी करने की इच्छा हमेशा के लिए जा चुकी थी।

महन्तेश हुग्गी
लेखा परीक्षक

28.बीज का घड़ा

एक बार की बात है भरत और कुमार नाम के दो मित्र थे। भरत ने तीर्थयात्रा पर जाने का निर्णय किया। भरत के पास 5000 सोने के सिक्के थे। उसने सभी सोने के सिक्के एक घड़े में डाले और ऊपर से उसमें बीज डाल दिए। जिससे यह लगे की पुरे घड़े में बीज ही है। वह यह घड़ा लेकर कुमार के घर गया। वह कुमार से बोला की मैं अपने परिवार के साथ तीर्थ यात्रा के लिए जा रहा हूँ। मुझे एक वर्ष का समय लगेगा जब तक मैं न लौटू तब तक यह घड़ा तुम अपने पास रख लो। कुमार ने घड़ा अपने पास रख लिया। एक वर्ष भी बीत गया लेकिन भरत तीर्थयात्रा से नहीं लौटा। कुमार ने यह जानने के लिए की घड़े में क्या है पूरा घड़ा खाली कर दिया।

जब उसको घड़े के नीचे सोने के सिक्के मिले तो वह बहुत खुश हुआ। उसने सभी सोने के सिक्के ले लिए। इसके बाद उसने बाजार से नए बीज लाकर घड़े को भर दिया। कुछ दिनों बाद जब भरत तीर्थयात्रा से लौटा तो उसने कुमार से अपना घड़ा माँगा। कुमार ने उसको वह घड़ा दे दिया। भरत घड़े में सोने के सिक्के न देखकर कुमार से अपने सोने के सिक्के मांगने लगा। कुमार ने उसको अनजान बनकर कहा की कौन से सोने के सिक्के तुमने तो मुझको बीजों से भरा घड़ा दिया था। भरत कुमार को लेकर तेनाली रमन के पास गया। उसने तेनाली रमन को सारी बात बताई।

तेनाली रमन ने घड़े के बीजों को देखकर कहा की तुम कुमार के पास घड़ा डेढ़ वर्ष पहले छोड़ कर गए थे। लेकिन ये बीज तो नए लग रहे हैं। कुमार ने तुम्हारे घड़े में से सोने के सिक्के निकाल कर इसमें नए बीज बाजार से लाकर डाल दिए हैं। कुमार फिर भी तेनाली रमन से मना करने लगा की उसने सोने के सिक्के नहीं निकाले। तेनाली ने कुमार को कहा की अब तुमको भरत को 10000 सोने के सिक्के लौटाने होंगे। यह सुनकर कुमार आश्चर्य से बोला की लेकिन घड़े में तो 5000 सिक्के थे। उसके यह बोलने से

यह तय हो गया की उसने ही सोने के सिक्के चुराई है। भरत ने तेनाली रमन की चतुराई की प्रशंसा की।

रागिनी सिंह
लेखा परीक्षक

29.बताओ तो जानें

1. समुद्र ने मुझे बनाया
उजली है मेरी काया
मेरे बिना हर स्वाद अधुरा
पापड हो या चना भटूरा
2. पानी से निकला वृक्ष एक
पत्ते नहीं हैं पर डाल अनेक
इस वृक्ष की ठंडी छाया,
पर नीचे कोई बैठ न पाया
3. गोल गोल है लडंगा उसका
एक टांग पर खडा रहे
करते हैं सब चाह उसकी
वर्षा और धूप सहे
4. शुरू काटो तो तौला जाऊं,
अंत काटो तो वृक्ष कहलाऊं
बीच काट कर जंगल जानो
जरा मुझे अब तुम पहचानो

एम. मनु
लेखा परीक्षक

- 1.उत्तर नमक
- 2.उत्तर फुव्वारा
- 3.उत्तर छाता
- 4.उत्तर बटन

30.अनमोल सीख

एक समय की बात है गौतम बुद्ध अपने शिष्यों के साथ एक सफर पर थे। सफर में चलते-चलते बुद्ध को प्यास लगी तो उन्होंने अपने एक शिष्य से कहा कि जाओ जाकर मेरे लिए पीने का पानी लेकर आओ। अब ऐसे में उस शिष्य ने आसपास देखा तो कहीं कोई पानी का स्रोत नहीं मिला। लेकिन उसने और कोशिश की तो रास्ते में उसे एक पानी का स्रोत मिला।

वहां उसने देखा कि कुछ लोग उस पानी के स्रोत में कपड़े धो रहे हैं और तभी वहाँ से एक बैलगाड़ी उस पानी के स्रोत के ऊपर से गुजर गया। ऐसे में वहां का पूरा पानी गंदा हो गया और उसमें मिट्टी भर गया। फिर उसने सोचा कि इस गंदे पानी को, मिट्टी से भरे हुए पानी को मैं बुद्ध के लिए कैसे लेकर जा सकता हूँ? तो वह खाली हाथ ही वापस चला गया और गौतम बुद्ध से जाकर यह बात बताई। बुद्ध ने कहा कि ठीक है हम सब यहां इस बड़े से पेड़ की छाया में बैठकर आराम करते हैं।

कुछ समय बीता फिर गौतम बुद्ध ने उसी शिष्य को फिर से पानी लाने को कहा। अब वह शिष्य वापस से उसी पानी के स्रोत के पास गया। वहां जाकर उसने देखा कि वह पानी बिलकुल साफ था और पीने योग्य था। अब वह शिष्य बुद्ध के लिए वह पानी लेकर गया और उसने वह पानी गौतम बुद्ध को पिलाया।

बुद्ध ने सब को यह बात बताई कि जिस तरह से पानी में कीचड़ मिट्टी फैल गई थी। लेकिन उसे थोड़ी समय तक छोड़ देने तक उसका सारा मिट्टी नीचे बैठ गया और वह पानी वापस से साफ हो गया। उसी तरह से हमारा मस्तिष्क भी है। जब हमारा मस्तिष्क अशांत हो तब उसे वक्त देकर उसे शांत करो। हमारा मस्तिष्क भी थोड़े समय के बाद शांत जरूर होगा। अशांत मस्तिष्क से कोई भी निर्णय नहीं लेना चाहिए। बस हमें करना यह है कि हमें अपने मस्तिष्क को थोड़ी देर तक शांत रखना है जिससे कि हम अच्छे फैसले ले सकते हैं।

शिक्षा- अशांत मस्तिष्क से लिए हुए फैसले हमेशा गलत होते हैं। हमें हमेशा शांत मस्तिष्क के साथ ही कोई निर्णय लेना चाहिए जिससे कि गलतियां होने की गुंजाइश कम हो जाती है।

विपिन कुमार
आशुलिपिक

31.सच्चे साथी

एक बार की बात है मीरा नाम की एक लड़की अपने पिता के साथ रहती थी। उसकी माँ बचपन में ही गुजर गयी थी। वह अपने घर का काम करती फिर कॉलेज जाती थी। कॉलेज जाते समय वह रोज़ रास्ते में एक जगह पक्षियों को दाना डालती थी।

उसके घर में भी 2 पक्षी थे उनको भी वह रोज़ दाना डालती थी। एक दिन उसको पक्षियों को दाना डालते जमींदार के बेटे ने देख लिया। उसने अपने पिता से जाकर मीरा से शादी करने की इच्छा जताई।

जमींदार ने मीराके पिता से बात करके अपने बेटे की शादी मीरा से करा दी। मीरा अपने साथ घर के पिंजरे के 2 पक्षी भी लेकर ससुराल आ गयी। वह उन पक्षियों को रोज़ दाना डालती थी। मीरा की सास को यह बिलकुल भी पसंद नहीं था।

वह उन पक्षियों को परेशान करती थी। वह उनका दाना पानी जमीन में फेंक देती थी। एक दिन मीरा की सास ने पक्षियों का पिंजरा ही जमीन पर फेंक दिया। उसे यह करते हुए मीरा ने देख लिया।

मीरा ने मना किया तो उसकी सास ने मीरा को ही डॉट दिया। इन सब बातों से मीरा परेशान रहने लगी। एक दिन मीरा के पति ने परेशानी का कारण पूछा तो उसने सारी बात बता दी। उसके पति ने मीरा को पक्षियों की भलाई के लिए उनको पार्क में छोड़ने की सलाह दी। अपने पति के कहने पर मीराने उन दोनों पक्षियों को बाकि के पक्षियों के साथ पार्क में ही छोड़ दिया।

वह उनको कभी कभी दाना देने पार्क में जाती थी। अब सभी पार्क के पक्षी मीराके अच्छे मित्र बन गए थे। पक्षी अब मीराके घर पर भी आने लगे। मीराकी सास को जब यह पता लगा तो वह गुस्सा हुई। वह मीरा को उसके मायके छोड़ने के लिए उसको साथ लेकर गयी।

रास्ते में कुछ चोरों ने मीरा की सास के गहने चुराने की कोशिश की। तभी मीरा के पक्षियों ने आकर चोरों पर हमला किया। जिससे चोर भाग गए। इसके बाद मीराऔर उसकी सास घर ही लौट आये।

अब मीरा की सास की सोच पक्षियों के प्रति बदल चुकी थी। उसने मीरासे कहा की अब हम दोनों चिड़ियाँ को दाना देने चला करेंगे और पहले के दो पक्षियों को घर वापिस लेकर आएंगे। यह बात सुनकर मीरा बहुत खुश हुई।

अभिषेक आनंद

डी. इ. ओ

32.स्वर्ग की यात्रा

एक बार बादशाह अकबर के बाल नाई काट रहा था। नाई बोला हुजूर आपने यहाँ राज्य में तो सबके लिए अच्छा प्रबंध किया है लेकिन आपके स्वर्ग में जो पूर्वज हैं उनके हालचाल के बारे में पता है वह वहाँ ठीक तो है ना।

उनको किसी चीज़ की कमी तो नहीं है। अकबर ने बोला कैसी पागलों जैसी बात कर रहे हो स्वर्ग के बारे में हमें कैसे पता की पूर्वज कैसे हैं। इस पर नाई बोला कुछ दूरी पर एक तांत्रिक रहता है वह लोगों को जिन्दा ही स्वर्ग की यात्रा कराता है।

उसने बहुत से लोगों को अपने पूर्वज से मिलाया है और स्वर्ग की यात्रा कराई है। अकबर ने बोला उस तांत्रिक को कल दरबार में हाजिर करो। अगले दिन नाई तांत्रिक को ले आया। अकबर के पूछने पर तांत्रिक बोला हजूर मैंने बहुत लोगों को स्वर्ग की यात्रा कराई है।

जिससे लोग अपने पूर्वज से मिल सकते हैं और उनका हाल चाल जान सकते हैं की वह किस हाल में है। अकबर ने कहा हमें भी अपने पूर्वज के हाल के बारे में जानना है उनको किसी चीज़ की जरूरत तो नहीं है। उनने कहा बीरबल मेरे सबसे अच्छे मित्र हैं मैं उनको अपने पूर्वज के हाल जानने के लिए भेजना चाहूंगा।

तांत्रिक बोला बहुत कम लोग स्वर्ग की सुख सुविधाओं को छोड़कर वापिस आ पाते हैं। अकबर ने कहा मुझे पूरा यकीन है बीरबल जरूर लौट आएंगे। बीरबल ने तांत्रिक से पूछा आप लोगों को स्वर्ग कैसे भेजते हैं। तांत्रिक बोला हम यमुना के किनारे लकड़ियों के बीच में व्यक्ति को खड़ा करके लकड़ियों में आग लगाते हैं और मैं मंत्रों के द्वारा उनको स्वर्ग भेज देता हूँ।

बीरबल ने पूछा कितना समय में व्यक्ति लौट कर आते हैं। तांत्रिक ने कहा 2 महीने में कुछ व्यक्ति लौट आते हैं। बाकि वही रह जाते हैं। बीरबल ने अकबर से कहा महाराज क्योंकि मुझे 2 महीने के लिए स्वर्ग की यात्रा पर जाना है तो मुझे अपने जो भी काम हैं वो निपटाने हैं इसलिए मुझे पांच दिन की मोहलत चाहिए।

अकबर ने इसकी मंजूरी दे दी। पांच दिन के बाद कहे अनुसार तांत्रिक ने लकड़ियों के बीच में बीरबल को खड़ा करके आग लगा दी और मंत्र पढ़े। इसके बाद तांत्रिक ने बोला बीरबल स्वर्ग की यात्रा के लिए चले गए और सब घर लौट आये।

2 महीने के बाद एक दिन बीरबल दरबार में हाजिर हुए उनके बाल और दाढ़ी बढ़ी हुई थी। सब बीरबल को देखकर बहुत हैरान हो गए। अकबर बीरबल को देखकर बहुत खुश हुए और पूछा तुम्हारे बाल और दाढ़ी इतनी क्यों बढ़ी हुई हैं और मेरे पूर्वज स्वर्ग में कैसे हैं।

बीरबल ने कहा आपके सभी पूर्वज स्वर्ग में खुश हैं लेकिन स्वर्ग में कोई भी नाई नहीं है जिसके उनके भी बाल और दाढ़ी मेरी तरह बढ़े हुए हैं। इसलिए आपके पूर्वज ने एक नाई को स्वर्ग भेजने के लिए कहा है। अकबर ने उसी नाई को बोला तुम कल स्वर्ग जाओगे।

नाई अकबर की बात सुनकर डर गया और कहा मुझे अभी मरना नहीं है और सारी सच्चाई बता दी की यह सब उसने और तांत्रिक ने दरबार के एक मंत्री के कहने पर किया है जो बीरबल को पसंद नहीं करता था और उनको रास्ते से हटाना चाहता था।

अकबर ने नाई, तांत्रिक को कारावास में डलवा दिया और मंत्री को देश निकाला दे दिया। अकबर ने बीरबल से पूछा लेकिन वह बचे कैसे बीरबल ने बताया की उनने स्वर्ग की यात्रा से पहले जो पांच दिन लिए थे उसमे जिस जगह से उनको स्वर्ग भेजा जाता वहाँ से अपने घर तक की सुरंग खुदवाई। अकबर ने बीरबल को बहुत प्रशंशा की।

अजय अग्रवाल
डी.इ.ओ

33.सही समझ

एक समय की बात है एक गुरु जी के 3 शिष्य थे। गुरु जी ने अपने 3 शिष्यों को एक पोटली में कुछ दाल के दाने बांधकर दिए और कहा इन तीनों दानों को अपने अनुसार उपयोग करे। और मुझसे 1 साल बाद आकर मिले।

तीनों शिष्यों ने अपनी अपनी पोटली ली और चल दिए।

पहले शिष्य ने पोटली खोली की उसने देखा इसमें तो मात्र चने के दाने हैं उसने वो दाने लिए और पूजा में रख लिया की ये गुरु जी हमें प्रसाद दिया है और रोज उसकी पूजा करता।

दूसरे शिष्य ने देखा इसमें चने के दाने हैं तो उसने उसकी दाल बनायीं और उसने दाल खुद खायी और उसने अपने परिवार को खिला ली।

उधर तीसरे शिष्य ने देखा और सोचा की गुरु जी ने ये दाल के दाने दिए हैं तो इसमें कुछ रहस्य होगा उसने वो दाने जमीन में गाड़ दिए जिससे 1 साल में बहुत उपज हो गया की और उसमें खूब दाल लगी जिससे जो भी आता तो उसे खूब दाल रोटी खिलाते।

1 साल बाद तीनों शिष्य गुरु जी के पास आये। और तीनों ने एक एक कर गुरु जी को बताया की क्या क्या उन्होंने किया उस पोटली के साथ क्या किया।

गुरु जी ने बताया की की मैंने एक जैसा ज्ञान दिया है सब को दिया पर सब ने अपनी श्रद्धा के अनुसार ज्ञान को उठाया।

यही सब हमारे साथ भी होता है एक क्लास में टीचर सब बच्चों को एक साथ पढ़ाते हैं एक जैसा पढ़ाते हैं पर कोई बच्चा टॉप करता है कोई फ़ैल हो जाता है हम अपनी बुद्धि को कितना स्थिर करते हैं, कैसे अपने दिमाग का इस्तमाल करते हैं यही हमारे जीवन की दिशा को निश्चित करता है। इसलिए हमेशा लर्निंग ऐटिट्यूड रखे, सीखते चले और जीवन को अच्छा बनाये।

संतोष कुमार
आशुलिपिक

34.सौ ऊंट

अजय राजस्थान के किसी शहर में रहता था। वह ग्रेजुएट था और एक प्राइवेट कंपनी में जॉब करता था। पर वो अपनी जिंदगी से खुश नहीं था, हर समय वो किसी न किसी समस्या से परेशान रहता था और उसी के बारे में सोचता रहता था।

एक बार अजय के शहर से कुछ दूरी पर एक फ़कीर बाबा का काफिला रुका हुआ था। शहर में चारों ओर उन्ही की चर्चा थी, बहुत से लोग अपनी समस्याएं लेकर उनके पास पहुँचने लगे, अजय को भी इस बारे में पता चला, और उसने भी फ़कीर बाबा के दर्शन करने का निश्चय किया।

छुट्टी के दिन सुबह-सुबह ही अजय उनके काफिले तक पहुँचा। वहां सैकड़ों लोगों की भीड़ जुटी हुई थी, बहुत इंतज़ार के बाद अजय का नंबर आया।

वह बाबा से बोला, "बाबा, मैं अपने जीवन से बहुत दुखी हूँ, हर समय समस्याएं मुझे घेरी रहती हैं, कभी ऑफिस की टेंशन रहती है, तो कभी घर पर अनबन हो जाती है, और कभी अपने सेहत को लेकर परेशान रहता हूँ। बाबा कोई ऐसा उपाय बताइये कि मेरे जीवन से सभी समस्याएं खत्म हो जाएं और मैं चैन से जी सकूँ?"

बाबा मुस्कुराये और बोले, "पुत्र, आज बहुत देर हो गयी है मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर कल सुबह दूंगा लेकिन क्या तुम मेरा एक छोटा सा काम करोगे?"

"ज़रूर करूँगा।", अजय उत्साह के साथ बोला।

"देखो बेटा, हमारे काफिले में सौ ऊंट हैं, और इनकी देखभाल करने वाला आज बीमार पड़ गया है, मैं चाहता हूँ कि आज रात तुम इनका खयाल रखो और जब सौ के सौ ऊंट बैठ जाएं तो तुम भी सो जाना", ऐसा कहते हुए बाबा अपने तम्बू में चले गए।

अगली सुबह बाबा अजय से मिले और पुछा, "कहो बेटा, नींद अच्छी आई।"

"कहाँ बाबा, मैं तो एक पल भी नहीं सो पाया, मैंने बहुत कोशिश की पर मैं सभी ऊंटों को नहीं बैठा पाया, कोई न कोई ऊंट खड़ा हो ही जाता !!!", अजय दुखी होते हुए बोला।

"मैं जानता था यही होगा आज तक कभी ऐसा नहीं हुआ है कि ये सारे ऊंट एक साथ बैठ जाएं !!!", बाबा बोले।

अजय नाराज़गी के स्वर में बोला, " तो फिर आपने मुझे ऐसा करने को क्यों कहा "

बाबा बोले, “ बेटा, कल रात तुमने क्या अनुभव किया, यही ना कि चाहे कितनी भी कोशिश कर लो सारे ऊंट एक साथ नहीं बैठ सकते तुम एक को बैठाओगे तो कहीं और कोई दूसरा खड़ा हो जाएगा इसी तरह तुम एक समस्या का समाधान करोगे तो किसी कारणवश दूसरी खड़ी हो जाएगी।। पुत्र जब तक जीवन है ये समस्याएं तो बनी ही रहती हैं कभी कम तो कभी ज्यादा ।”

“तो हमें क्या करना चाहिए?”, अजय ने जिज्ञासावश पुछा।

“इन समस्याओं के बावजूद जीवन का आनंद लेना सीखो कल रात क्या हुआ , कई ऊंट रात होते -होते खुद ही बैठ गए, कई तुमने अपने प्रयास से बैठा दिए, पर बहुत से ऊंट तुम्हारे प्रयास के बाद भी नहीं बैठे और जब बाद में तुमने देखा तो पाया कि तुम्हारे जाने के बाद उनमें से कुछ खुद ही बैठ गए । कुछ समझे । समस्याएं भी ऐसी ही होती हैं, कुछ तो अपने आप ही खत्म हो जाती हैं, कुछ को तुम अपने प्रयास से हल कर लेते हो और कुछ तुम्हारे बहुत कोशिश करने पर भी हल नहीं होतीं, ऐसी समस्याओं को समय पर छोड़ दो उचित समय पर वे खुद ही खत्म हो जाती हैं । और जैसा कि मैंने पहले कहा जीवन है तो कुछ समस्याएं रहेंगी ही रहेंगी । पर इसका ये मतलब नहीं की तुम दिन रात उन्ही के बारे में सोचते रहो ऐसा होता तो ऊंटों की देखभाल करने वाला कभी सो नहीं पाता। समस्याओं को एक तरफ रखो और जीवन का आनंद लो चैन की नींद सो जब उनका समय आएगा वो खुद ही हल हो जाएँगी पुत्र ईश्वर के दिए हुए आशीर्वाद के लिए उसे धन्यवाद करना सीखो पीड़ाएं खुद ही कम हो जाएंगी ” फ़कीर बाबा ने अपनी बात पूरी की ।

उदयकुमार बी मनकट्टी
लिपिक/टंकक

35. बुद्धिमान किसान

एक बार एक व्यापारी व्यापार करने के लिए एक गाँव में पहुँचा। गाँव में उसे एक किसान मिला। व्यापारी ने उससे सराय का रास्ता पूछा। किसान उसे सराय का रास्ता बता अपने रास्ते चला गया। व्यापारी ने सराय में एक कमरा लिया।

फिर अपने घोड़े को सराय के अस्पताल में बाँध कर वह सोने के लिए अपने कमरे में चला गया। अगली सुबह सराय के मालिक ने दावा किया, “यह घोड़ा मेरा है। इस घोड़े को मेरे अस्पताल ने जन्म दिया है।”

व्यापारी यह झूठ सुनकर हैरान था। दोनों में इस बात को लेकर भयंकर वाद-विवाद होने लगा। थक-हारकर दोनों न्याय पाने के लिए कचहरी पहुँच गए। व्यापारी ने अपनी ओर से किसान को अपना गवाह बनाया।

किसान कचहरी में देर से पहुँचा और न्यायाधीश से बोला, “श्रीमान्! मैं देर से आने के लिए क्षमा चाहता हूँ। मुझे आने में देर इसलिए हुई क्योंकि मैं अपने खेतों में उबले हुए गेहूँ बो रहा था।”

न्यायाधीश ने कहा, “परन्तु उबले हुए गेहूँ तो उग ही नहीं सकते।” वह बोला, “जब अस्पताल घोड़े को जन्म दे सकता है तो कुछ भी संभव है।”

न्यायाधीश किसान की बात का मतलब समझ गए। उन्होंने सराय के मालिक को धोखाधड़ी के अपराध में सजा सुनाई।

टी वेंकट रथनैया
एम टी एस

36. जिंदगी का बोझ

एक घने जंगल में एक साधु महाराज रहा करता था। कई गांव के लोग अपनी समस्याएं लेकर आते थे और साधु महाराज उनका समाधान करते थे।

एक बार जब साधु महाराज बाजार गए थे तब उन्हें एक आदमी मिला। उसने साधु महाराज से पूछा, “गुरुदेव, खुश रहने का राज क्या है?”

साधु महाराज बोले, “तुम मेरे साथ जंगल में चलो, वहीं पर मैं तुम्हें खुश रहने का राज बताता हूँ।”

वह आदमी बड़ी उत्सुकता से साधु महाराज से साथ जंगल जाने लगा।

रास्ते में साधु महाराज ने एक बड़ा सा पत्थर उठाया और उस आदमी को दे दिया और कहा, “इसे पकड़ो और चलो मेरे साथ।”

उस आदमी को समझ में नहीं आ रहा था, कि उनसे पत्थर उठाने के लिए क्यों कह रहे हैं। इसमें खुश रहने का क्या राज है? लेकिन उसने कोई सवाल जवाब नहीं करते हुए साधु महाराज की बात को मानना ही उचित समझा और पत्थर को उठाया और चलने लगा। कुछ समय बाद उस व्यक्ति के हाथ में दर्द होने लगा, लेकिन वह चुप रहा और चलता रहा। लेकिन जब चलते हुए बहुत समय बीत गया और उससे दर्द सहा नहीं गया, तो उसने कहा कि गुरुदेव अब मैं इस पत्थर का वजन नहीं उठा सकता हूँ। मेरे हाथों में बहुत तेज दर्द हो रहा है। साधु महाराज ने कहा कि पत्थर को नीचे रख दो। पत्थर को नीचे रखने से उस आदमी को बड़ी राहत महसूस हुई।

तब साधु महाराज ने कहा, “यही है खुश रहने का राज, जिस तरह इस पत्थर को | मिनट तक हाथ में रखने पर थोड़ा सा दर्द होता है और घंटे तक

हाथ में रखने पर ज्यादा दर्द होता है। ठीक उसी तरह दुखों के बोझ को जितने ज्यादा समय तक हम अपने जीवन में रखेंगे उतने ही ज्यादा हम दुखी और निराश रहेंगे। अगर तुम खुश रहना चाहते हो तो दुःख रूपी पत्थर को जल्दी से जल्दी अपनी जिंदगी से बहार निकल दो”

सरोज कुमार साह
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

हिन्दी समारोह 2021



हिन्दी समारोह 2021



हिन्दी समारोह 2021



हिन्दी समारोह 2021



हिन्दी समारोह 2021



हिन्दी समारोह 2021





प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
का कार्यालय
दक्षिण पश्चिम रेलवे हुब्बल्ली
580023 (कर्नाटक)